खंड 4

क्षेत्रीयकार्य (फील्ड वर्क)

ignou
THE PEOPLE'S
UNIVERSITY

इकाई 12 मानवविज्ञान में क्षेत्रीयकार्य परंपराएं 187

इकाई 13 फील्ड वर्क करना 198

इकाई 14 प्रविधि और तकनीक 212

इकाई 12 मानवविज्ञान में क्षेत्रीयकार्य परंपराएं

इकाई की रूपरेखा

12.0 परिचय

12.1 आर्म–चेयर मानव विज्ञान की आलोचना

12.2 फील्डवर्क का महत्त्व

12.3 फील्डवर्क का इतिहास

12.4 अल्फ्रेड रेजिनाल्ड रेडक्लिफ–ब्राउन और ब्रॉनिस्लाव कास्पर मेलिनोव्स्की का योगदान

12.5 फील्डवर्क में नैतिकता

12.6 सारांश

12.7 संदर्भ

12.8 आपकी प्रगति जाँच करने के लिए उत्तर

अधिगम का उद्देश्य

इस इकाई के द्वारा आप निम्न बातों को जान पाएँगे

- सामाजिक–सांस्कृतिक मानव विज्ञान में क्षेत्रीयकार्य की उत्पत्ति;
- सामाजिक–सांस्कृतिक मानव विज्ञान में फील्डवर्क परंपरा की प्रगति में ए.आर रेडक्लिफ–ब्राउन और ब्रोनिस्लाव कॉस्पर मेलिनोवस्की का योगदान;
- इक्कीसवीं सदी में क्षेत्र (फील्ड) की अवधारणा कैसे बदल गई है;
- प्रारंभिक बीसवीं सदी का भारत।

12.0 परिचय

मानव विज्ञान एक अवलोकन, तुलनात्मक और सामान्यीकरण का विज्ञान है। इस कथन को हम सामान्य अर्थों में निम्नांकित रूप में समझ सकते है। (1) इसमें एक छोटी इकाई पर अवलोकन की तकनीकों का प्रयोग करके तथ्य(डेटा) एकत्र किया जाता है (जैसे कि एक समाज, समुदाय, पड़ोस, समूह या एक संस्था) (2) इस अध्ययन में पूरे समाज के बारे में कथन अमूर्त है, सामाजिक मानव विज्ञान को समाज के एक प्रेरक विज्ञान के रूप में समझा जाता है, जहाँ हम विशेष से सामान्य की ओर बढ़ते हैं। (3)इसके अतिरिक्त विभिन्न समाजों के आंकड़ों को अलग–अलग समाजों या उन इकाइयों के बीच समानता और अंतर का पता लगाने के लिए तुलनात्मक रूप से प्रयोग किया जाता है और (4)अध्ययन की इकाई के बारे में सामान्यीकरण की स्थिति पर पहुँचने का प्रयास किया जाता है।

योगदानकर्त्ता : प्रोफेसर. विनय कुमार श्रीवास्तव द्वारा संपादित पूर्व प्रोफेसर एवं अध्यक्ष, मानव विज्ञान विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय. वर्तमान निर्देशक, भारतीय मानवविज्ञान सर्वेक्षण।
डॉ. रूखशाना जमान, मानव विज्ञान संकाय, सामाजिक विज्ञान विद्यापीठ, इग्नू, नई दिल्ली।

एक समय पर तुलनात्मक अध्ययन से लिए गए इन सामान्यीकरणों को 'कानून' कहा जाता था (वह एक 'समान के कामकाज के नियम')। आज 'कानून' शब्द को मुख्य रूप से छोड़ दिया गया है क्योंकि यह महसूस किया जाता है कि प्राकृतिक और जैविक विज्ञान की भांति समाजविज्ञान में इस तरह के कानूनों को प्राप्त करना संभव नहीं है। मानव व्यवहार में प्राकृतिक और जैविक घटनाओं में जो पाया जाता है उसकी तुलना में परिवर्तनशीलता का एक बड़ा मसौदा है। हालाँकि, अध्ययन के अंतर्गत 'सभी इकाइयों के लिए सामान्य पहुंच है' पर पहुँचने का विचार जारी है। इस इकाई में हम फील्डवर्क अध्ययन और मानव विज्ञान अनुशासन में इसकी आवश्यकता के बारे में अध्ययन करेंगे। आर्मचेयर मानवविज्ञान से हम किस प्रकार क्षेत्रीयकार्य (फील्डवर्क) में चले गए, जहाँ दिन–प्रतिदिन मानव की गतिविधियों को देखा जाता है और फील्डवर्क के माध्यम से रिकार्ड किया जाता है,यह सब इस इकाई का हिस्सा होगा। हम यह भी ध्यान में रखेंगे कि 21वीं सदी में फील्डवर्क और 'फील्ड' की अवधारणा को कैसे समझा जाता है और एक मानव विज्ञानी को किन नैतिक चिंताओं का सामना करना होता है।

12.1 आर्मचेयर मानव विज्ञान की आलोचना

मानवविज्ञान के आरंभिक युग में हमारे विद्वानों ने स्वयं से कोई अनुभवजन्य अध्ययन नही किए बल्कि वे दूसरों द्वारा जैसे कि यात्री, मिशनरियों, सेना के जवान, फोटो–पत्रकार आदि से संकलित की गई सूचनाओं के आधार पर ही सामाजिक निष्कर्ष निकालते थे। जिसके कारण अक्सर इन्हें अप्रतिष्ठाजनक रूप से 'आर्मचेयर एंथ्रोपॉलजिस्ट' कहा जाता था। इसका मतलब यह था कि वास्तविकता का सामना करने के बजाए वे सिर्फ यह कल्पना कर रहे थे कि जो उन्होंने खोजा था वह तार्किक रूप से संभव है, या एक समय में संभव हो सकता है। और यह धारणा उन्होंने पक्षपाती, अंतिरंजित और पूर्वसूचित जानकारी के टुकड़ों को इकट्ठा करके अकुशल व्यक्तियों की सूचना के आधार पर निर्मित की गई थी। अक्सर उनका उद्देश्य पश्चिमी दुनिया को गैर–पश्चिमी लोगों की विषम और अजीबोगरीब प्रथाओं के अस्तित्व से चौकाना मात्र था।

एक बार 'आर्मचेयर एंथ्रोपॉलजी' परंपरा को खारिज किए जाने के बाद समाज में जो दृष्टिकोण सामने आया वह समक्ष अध्ययन (फस्ट–हैंड) था। इसका मतलब यह था कि मानव वैज्ञानिक केवल संग्रहकर्ता के रूप में थे इसके लिए न विश्लेषक और न ही सूचनाओं की व्याख्या करने वाले को एकत्र किया गया था।

इस प्रकार अब, मानव वैज्ञानिक अपना डेटा वास्तविक समाज से लेते हैं, लोगों के साथ उनके प्राकृतिक वास में रहते हुए जुटाये गए डेटा का विश्लेषण और व्याख्या करते हैं। जिससे कि समाज की संरचना और कार्य को समझ सके। हमें सच का ज्ञान अवश्य होना चाहिए–समाज कैसा है–इससे पहले कि हम उन बदलाव के बारे में सोचें जिन्हें पेश किए जाने की संभावना है। यह अतीत में देखा गया था कि परिवर्तन के कई कार्यक्रम और कई अभिनव परियोजनाएं (जिनमें से कई विश्वसनीय थे) लोगों द्वारा अस्वीकार कर दिया गया था क्योंकि, ये लोगों के रीति–रिवाजों और प्रथाओं के अनुरूप नहीं थे और उनके आकांक्षाओं को और माँगों को प्रतिबिंबित नहीं करते। इस प्रकार लोगों को प्रस्ताविक परिवर्तन ही शुरू किए गए थे जो उन समुदायों के लिए अंजान था और इसका परिणाम यह हुआ कि लोगों ने बिना किसी हिचकिचाहट के उसे खारिज कर दिया। कुछ मामलों में राज्य और परिवर्तन–उत्पादक एजेंसियों ने सोचा कि लोग परिवर्तन और दीर्घकालिक लाभों से अन्जान होने के कारण निष्क्रियता दिखाते है। वे परिवर्तन और नवाचारों को तभी स्वीकार करेंगे जब इन्हें जबरन लागू किया जाएगा। जिसका उन मानवविज्ञानिकों द्वारा कड़ा विरोध किया गया और बताया कि

परिवर्तन को इसलिए अस्वीकार कर दिया गया था क्योंकि उन्हें लोगों के सामाजिक जीवन, उनकी जरूरतों और आवश्यकताओं के ज्ञान के बिना पेश किया गया था। ऐसी स्थिति में किसी भी कार्यक्रम को लागू करने की अस्वीकारिता बढ़ जाती है।

अपनी प्रगति जाँचे

1. क्या आर्मचेयर मानवविज्ञानी ही फील्डवर्कर थे, यह कथन सही है या गलत?

.....

.....

.....

.....

12.2 क्षेत्रीयकार्य का महत्व

सामाजिक मानवविज्ञान के कार्य की पृष्ठभूमि में फील्डवर्क एक केंद्रीय कार्य के रूप में निर्मित हुआ। संयोग से यह न केवल सामाजिक मानवविज्ञान में अपना योगदान दे रहा बल्कि अन्य क्षेत्रों, प्राकृतिक एवं जैविक विज्ञान में भी फील्डवर्क एक ज्ञान पद्धति के रूप में संदर्भित है। आज अन्य विषयों ने अपने पाठ्यक्रमों में फील्डवर्क पर आधारित पाठ्यक्रम पेश किए हैं जिनमें कला, लोक और विज्ञान को सिखाया जा रहा हैं। जिसमें यह विधा मानवविज्ञानियों से फील्डवर्क के रूप में ली गई है।

हेनरी बर्गसन(1991) द्वारा किसी घटना को समझने के लिए दो तरीके बताते हैं, जिसमें पहला है कि घटना के इर्द–गिर्द रह के या फिर उस घटना के अंदर रह के। फील्डवर्क की कार्यप्रणाली यह मानती है कि किसी घटना को समझने के लिए उसके अंदर जाना जरूरी है, जिसे ''इनसाइडर्स व्यू'' कहा जाता है। फील्डवर्क एक डेटा संग्रह की विधि है, जिसमें अन्वेषक लोगों के साथ उनके प्राकृतिक वास में रहकर ,उस समाज का सदस्य बनकर सीखता है।

हमने यह अनुभव किया है कि आखिर क्या अंतर होता है जब हम कहते है 'लोग क्या सोचते है', 'लोग क्या कहते है', 'लोग क्या करते है' और 'वे क्या सोचते है जब वे कुछ करते है'। अगर हम केवल लोगों से इस बारे में प्रश्न करते है और उनके जवाब लिखते हैं जैसा कि 'सर्वे' में होता है, तब हम केवल उसी पर जानकारी हासिल करेंगे जो 'वह कहते हैं। क्या यह केवल सामान्य रूप से और सामाजिक रूप से वांछित उत्तर हैं। अन्य शब्दों में, जो वह कह रहे हैं, हो सकता है कि वह पूर्ण रूप से सत्य हो अथवा न भी हो। हमारे पास इस प्रकार के कई मामले रिकॉर्ड में दर्ज है। उदाहरण के लिए पॉल बोहानोन के बुनयोरो के अध्ययन में पाते है कि एक प्रतिवादी, पेशे से एक फार्मासिस्ट जिसे अपनी ईमानदारी पर बहुत घमंड है, वही इंसान अस्पताल से दवाइयाँ चुराकर एक मरीज को अवैध रूप से बेच रहा है। सच्चाई को जानने के लिए हमें काफी समय तक लोगों के साथ रहना होगा और उनके वास्तविक जीवन में झांकना होगा और यह देखना होगा कि सत्य क्या है, यह जो सामने खुद देख रहे हैं, या वह जैसे लोग बता रहे हैं, जो वास्तव में 'एक आदर्श तरीका है, बजाए उसके जो वह सोचते हैं।

अपनी प्रगति जाँचें

2. क्षेत्रीयकार्य (फील्डवर्क) को परिभाषित करें।

.....

.....

.....

12.3 फील्डवर्क का इतिहास

फील्डवर्क की कार्यप्रणाली अपने नियमों और प्रक्रियाओं के साथ समय के साथ विकसित हुई है। प्रारंभ में, जैसा कि हमने सीखा है कि पहले मानवविज्ञान क्षेत्र व्यापक उन्मुख नहीं था। 1859 में प्रजातियों की उत्पत्ति पर चार्ल्स डार्विन के प्रकाशन के बाद मानव विज्ञान का तेजी से विकास हुआ। मानवविज्ञानी अपनी शुरूआत से समाज और संस्कृति के विकास के अध्ययन के लिए प्रेरित हुआ, मानवविज्ञान ने पहला दृष्टिकोण विकासवाद के रूप में रखा था जिसे समाज के विकास के साथ माना जाता था। यह विभिन्न संस्थानो और उनके रूपों का उत्तर देता हैं जैसे कि ये संस्थान क्यों अस्तित्व में आए और वे कौन से चरण थे जिनके माध्यम से वे अपने समकालीन रूप तक पहुँचते हैं (विकास का क्रम) इत्यादि।

जैसा कि पहले बताया गया कि शुरुआती विद्वानों को बाद में मानवविज्ञानी के रूप में पहचान मिली, इन्हें पहले यात्रा वृतांतो और प्रशासनिक रिपोर्टों को उपलब्ध कराने तक ही माना गया था। यह जानकर थोड़ी हैरानी हो सकती है कि तथाकथित 'आदिम लोगों' के समुदाय और गैर–पश्चिमी दुनिया के समाजों पर लिखने से पहले वहां का दौरा भी करना चाहिए था। हालांकि, उनमें से कुछ (जैसे एडवर्ड टायलर, लुईस मॉर्गन) ने अपने अध्ययन क्षेत्रों का दौरा किया था। ब्रिटिश मानवविज्ञानी ई.बी.टायलर (1832–1917) ने मानव विकास (विकासवाद) के सिद्धांत पहलू के समर्थन में 1850 के मध्य में मैक्सिको में एक क्षेत्रीय अभियान में शौकिया पुरातत्विद की सहायता की। वर्ष 1861 में टायलर ने इस फील्डवर्क के आधार पर अपना पहला काम अनाहुआक या *मैक्सिको एंड मैक्सिकन; एंसेंट एंड मार्डन* प्रकाशित किया। अमेरिकी मानवविज्ञानी एल.एच. मॉर्गन (1818–1881), टायलर के समकालीन ने विकासवाद पर काम किया और हमें नातेदारी की अवधारणा प्रदान की। उन्होंने ईराक्विस समुदायो पर कानूनी मसलों पर काम करते हुए समुदाय के बारे में 1851 में *लीग ऑफ ईराक्विस* नामक पुस्तक में अपने नातेदारी संबंधी निष्कर्ष प्रकाशित किए।

दुनिया के अज्ञात हिस्सों की यात्रा चौदहवीं शताब्दी से शुरू हुई। समय बीतने के साथ यात्रा और सुविधा में सुधार के साथ इनके यात्राओं की संख्या में भी वृद्धि होने लगी, जिससे कई तरह के यात्रा वृत्तांत भी निर्मित हुए। पहले के मानवशास्त्रियों ने इन सामग्रियों को उत्पत्ति और विकास के सिद्धांतों के निर्माण के लिए ध्यान में रखा और प्रयोग भी किया था। दूसरे शब्दों में, उन्होंने इन समुदायों के बीच कोई प्रत्यक्ष अध्ययन नहीं किया था।

19वीं सदी के दूसरे भाग में संग्रहालय विकसित किए जा रहे थे, इन सभी संग्रहालयों में लोगों के नृवंशविज्ञान के लिए एक विभाग बनाया गया। आदिवासी क्षेत्रों में कई भ्रमण आयोजित किए गए ताकि उनकी सांस्कृतिक वस्तुओं को संग्रहालयों में रखा जा सके। इनका काम न केवल वस्तुओं को संग्रहालयों में रखना था बल्कि, उनके बारे में लिखना भी था। इस प्रकार संग्रहालय के सामग्री संकलन हेतु भ्रमण के साथ ही एक प्रकार से फील्डवर्क का अस्तित्व

सामने आया। ब्रिटिश मानवविज्ञानी जैसे, डब्ल्यू.एच.आर रिवर्स (1864) और ए.सी. हैडेन (1855–1940) ने ऑस्टेलिया और प्रशांत सागर के टोर्रस स्टेट में एक फील्ड अभियान शुरू किया जबकि अमेरिकी मानवविज्ञानी फ्रांज बोआस (1858–1942) ने कनाडा में बैफिन आइसलैंड के एसकीमोस(1883) पर फील्डवर्क शुरू किया।

19वीं सदी के करीब एक विकासवादी दृष्टिकोण सामने आ गया था जो कि पूरी तरह से यात्रा वृतांत के तथ्यों पर निर्भर है। इसीकारण से विकासवादी सिद्धांत की आलोचना की गई थी जिसका कारण केवल तथ्यों को एकत्र करने से नही था बल्कि ,यात्रा–वृत्तांतो पर अधिक निर्भरता भी थी। इसलिए सांस्कृतिक तथ्यों के बारे में नये डेटा एकत्र करने की आवश्यकता थी। विकासवादी सिद्धांत के साथ तब एक सामान्य असंतोष सामने आया जब यह दिखाया गया था कि आधुनिक समाजों के कई संस्थानों को भी सरल समाजों में भी पाया गया। उदाहरण के लिए, एकपतित्व विवाह और एकल परिवार सरल समाजों में भी पाए जाते थे। इसलिए, कोई यह कैसे कह सकता है कि ये संस्थाएं समय के साथ विकसित हुए थें, जैसा कि मॉर्गन ने माना जिसमें उन्होंने संकरता या सामूहिक विवाह को उदाहरण माना था।

इन सभी कारकों ने मानव विज्ञान के दृष्टिकोण में एक महत्त्वपूर्ण बदलाव का नेतृत्व किया। बजाए यात्रा वृत्तांतो पर निर्भर होने के मानवविज्ञानियों ने स्वयं लोगों की संस्कृति का अध्ययन किया। फील्डवर्क के अस्तित्व में आते ही ये मानवविज्ञान के कार्यों की पहचान बन गया।

अपनी प्रगति जाँचें

3. उन मानववैज्ञानिक का नाम बताइए जिन्होंने एक शौकिया पुरातत्वविद् की सहायता उनके मेक्सिको के क्षेत्रीयकार्य में की थी।

   .....

   .....

   .....

4. सन् 1851 में ''लीग ऑफ दी ईराक्विस'' किसने लिखी थी

   .....

   .....

   .....

5. टोरेस स्र्टेट्स में फील्डवर्क करने वाले ब्रिटिश मानवविज्ञानी का नाम बताइए।

   .....

   .....

   .....

6. किस मानववैज्ञानिक ने एसकिमोस ऑफ बॉफिन आइलैंड ने कार्य किया था?

   .....

   .....

   .....

12.4 अल्फ्रेड रेजिनाल्ड रेडक्लिफ–ब्राउन और बोनिस्लाव कास्पर मेलिनोवस्की का योगदान

आरंभिक समय के प्रसिद्ध क्षेत्र अध्ययनों में से एक ए.आर.ब्राउन द्वारा अंडमान द्वीप समूह पर किया गया काम था। ब्राउन, जो बाद में रैडक्लिफ–ब्राउन बन गए, उन्होंने दो साल (1906–08 से) इन लोगों के साथ बिताए और 1910 में अपने मास्टर शोध प्रबंध को लिखा, जो उनके द्वारा एकत्र की गई जानकारी के आधार पर निर्मित किया गया था। यद्यपि यह काफी हद तक एक प्रकार्यात्मक अध्ययन था। कहने का तात्पर्य यह है कि अंडमानी समाज किस प्रकार समग्र था, इसके भी कई उदाहरण हैं, जिसमें लेखक ने देखा कि सांस्कृतिक लक्षण कैसे एक–दूसरे से अलग थे। दूसरे शब्दों में, ब्राउन का काम भी प्रसरणवाद से संबंधित था इसका कारण यह था कि वह डब्ल्यू.एच.आर. रिवर्स के विद्यार्थी थे जो अपने समय के प्रसिद्ध प्रसारकों में से एक थें। ब्राउन का फील्डवर्क अनुकरणीय नहीं था, लेकिन उन्होंने यह जरूर दिखाया कि विकासवादियों के पास लोगों के बारे में पूर्व सभी मान्यताओं को दूर करने के लिए समाज का पहला आवश्यक अध्ययन मौजूद था।

फील्डवर्क के व्यापक परिसर को निर्धारित करने में पोलिश मूल के एक प्रमुख विद्वान ब्रोनिस्लाव मोलिनोवस्की थे, जिन्होंने सी.जी.सिल्गिमैन के निर्देशन में मानवविज्ञान का अध्ययन किया। उन्होंने ट्रोब्रिएंड आइलैंडर्स के साथ गहन फील्डवर्क किया। अगस्त 1914 से मार्च 1915 तक ट्रोबिएंड पर लोगों के साथ इकतीस महीने का समय बिताया, फिर मई 1915 से मई 1916 तक, और फिर, अक्टूबर 1917 से अक्टूबर 1918 तक फील्डवर्क का आखिरी कार्यकाल पूरा किया। 1922 में उनकी प्रसिद्ध पुस्तक *आर्गेनॉट्स ऑफ द वेस्टर्न पैसफिक* प्रकाशित हुई जो जो ट्रोब्रिएंड समाज में विभिन्न प्रकार के आदान–प्रदान की प्रणाली का विश्लेषण प्रदान करती है।

मैलिनोवस्की लोगों के बीच में ही रहते थे, उन्होंने ओमारकाना गाँव में अपना शिविर बनाया और लोगों द्वारा बोली जाने वाली भाषा सीखकर स्वंय से सारी जानकारी एकत्र कर ली। दूसरी ओर, ब्राउन ने मुख्य रूप से अनुवादकों और दुभाषियों की सहायता से अपना डेटा एकत्र किया। मालिनोवस्की ने अपने लेखन में हमेशा लोगों की स्थानीय भाषा सीखने के महत्व को बनाए रखा, क्योंकि लोगों की सांस्कृतिक अवधारणाओं को उनकी भाषा जाने बिना नहीं समझा जा सकता है। मालिनोवस्की के वर्णन में फील्डवर्क कैसे किया जाना चाहिए इसे निर्धारित करने का प्रयास किया गया। इस आधार पर उनके ट्रोब्रिएंड आइलैंडर्स के साथ किए गए फील्डवर्क के आधार पर कुछ निम्नलिखित सिद्धांतों को निर्मित करते हैं:

1. नृवंशविज्ञानी को लंबे समय तक एक ही तरह के व्यवहार का निरीक्षण करना चाहिए और समय के विभिन्न बिंदुओं पर होने वाली घटनाओं का भी अवलोकन करना चाहिए। उसे इसके एकान्त उदाहरणों पर भरोसा नहीं करना चाहिए, क्योंकि यह विचित्र हो सकता है। इस नियम का उद्देश्य किसी भी विचित्र तत्व या सामाजिक क्रिया में स्वभावगत विशेषत पर शासन करना है। हमारा काम यह समझना है कि, समाज में एक विशेष प्रकार का व्यवहार विशिष्ट है, या अत्यधिक व्यक्तिगत है। हमारी रुचि व्यक्ति में नहीं है, लेकिन समुदाय के सामूहिक व्यवहार को समझने में है। इसीलिए एक ही प्रकार के व्यवहार को उन सभी विशेषताओं में मौजूद सामान्य विशेषताओं की खोज के लिए लंबे समय तक देखा जाना चाहिए। इसे मानव क्रिया का कंक्रीट, 'सांख्यिकीय दस्तावेज' कहा जाता है।

2. पश्चिमी दुनिया से आए शुरुआती यात्रीयों ने तथाकथित 'आदिम' क्षेत्र के लोगों में विषमताएं, अजीब रीति–रिवाजों और मान्यताओं के अध्ययन पर अपनी दृष्टि बनाई, जिनका उनकी संस्कृतियों में अभाव था। वे मुख्य रूप से इन लोगों और पश्चिमी लोगों के बीच मतभेदों की पहचान करने में रुचि रखते थे। इस प्रकार, यह स्पष्ट था कि उन्होंने लोगों के रोजमर्रा के जीवन पर कोई विशेष ध्यान नहीं दिया। और 'चयनात्मक अध्ययन' के इस दृष्टिकोण के लिए यह तर्क दिया गया था कि हमें लोगों की रोजमर्रा जिंदगी का अध्ययन करना चाहिए जिसे आमतौर पर बिना प्रमाण के सत्य मान लिया जाता था। हमारा काम पूरे समाज का अध्ययन करना है, इसके विभिन्न हिस्सों के बीच का संबंध और जिस तरह से वे सभी मिलकर काम करते हैं ये सब। इसलिए जरूरी है कि इसके कुछ हिस्सों के बजाय इसकी संपूर्णता को जानना चाहिए, जो आगंतुकों के बीच रुचि को बढ़ाती हैं। सलाह यह है कि समाज के हर पहलू का अध्ययन किया जाए न कि केवल जो अजीब दिखाई देता है।

3. मोलिनोवस्की का कहना है कि नृवंशविज्ञानियों को गाँव के जितने करीब हो सके रहना चाहिए। जो वहाँ के स्थानीय लोग करते हैं, उनके रीति–रिवाज, समारोह में बार–बार भाग लेना चाहिए। कुछ ऐसी भी घटना है जिन्हें रिकॉर्ड नहीं किया जा सकता परंतु वहाँ रहकर उसका निरीक्षण किया जा सकता है। उदाहरण के लिए मेलिनोव्सकी ने अपनी सूची में यह भी लिखा है, 'लोगों की दिनचर्या' 'कामकाजी दिन' 'किस तरह वह अपने शरीर का ध्यान रखते है, कैसे खाना खाते है, और कैसे उसे बनाते है, कैसे लोग समाज में रहते हैं, इत्यादि। ये घटनाएं सामाजिक जीवन की सूक्ष्मता *'इंपोंडेराबिला ऑफ सोशल लाइफ'* को दिखाते है, जिसकी निरंतरता को सावधानीपूर्वक दर्ज करने की आवश्यकता है।

4. हमें उन सटीक शब्दों पर ध्यान देना चाहिए जिनमें लोग अपने भावनाओं, विचारों और विश्वासों का संचार करते हैं। इन नृवंशविज्ञान संबंधी कथनों, विशिष्ट आख्यानों, विशिष्ट उक्तियों, लोककथाओं की वस्तुओं और जादुई सूत्रों को समग्र रूप में दर्ज किया जाना चाहिए। इनका संग्रह यह बताता है कि मेलिनोवस्की एक 'कॉर्पस शिलालेख' कहते हैं, जो हमें लोगों की 'मानसिकता; की समझ के लिए मार्गदर्शन प्रदान करता है। प्रत्येक शब्द को सांस्कृतिक रूप से समझने और विश्लेषण करने की आवश्यकता है। जिसमें भाषा, संस्कृति का एक दर्पण है।

5. मानवशास्त्रीय अन्वेषण के उद्देश्यों पर मेलिनोवस्की (1922) कहते है, मूल दृष्टिकोण को समझिए, उनका जीवन के साथ संबंध, उनकी दुनिया की दृष्टि और लोगों का जीवन समझें"। प्रत्येक संस्कृति में मूल्यों का अपना सेट होता है, चीजों को करने का तरीका होता है, जो लोगों के जीवन को एक अलग अर्थ देता है, दूसरे शब्दों में, इससे लोगों के जीवन पर प्रत्येक संस्कृति की पकड़ अलग–अलग होती है। अगर हम बाहरी लोगों के हिसाब से देखें तो हम इसे कभी समझ नहीं पाएंगे, हमारे आदर्श बीच में आएंगे और हम एक पक्षपाती और पूर्वाग्रह दृश्य प्रदान करेंगे। इस प्रकार मानवविज्ञानियों को 'लोगों के मस्तिष्क' का 'आंतरिक' अध्ययन करना चाहिए ।

गतिविधि

अवलोकन के सार को समझने के लिए आप उदाहरणतः बस/मेट्रो/ट्रेन द्वारा यात्रा करते हुए लोगों को देखें, कि लोग एक दूसरे से कैसे बर्ताव करते हैं। कैसे एक दूसरे से बातचीत करते हैं, या नहीं करते है। लोग सार्वजनिक स्थानों पर फोन पर कैसे बात करते हैं। ऐसे विभिन्न प्रकार के व्यवहार को नोट करिए और टिप्पणी लिखिए।

मालिनोवस्की ने फील्डवर्क के बुनियादी क्षेत्र को निर्धारित किया है। लम्बे समय तक उन्होंने ट्रेनिंग दी है कि कैसे फील्डवर्क करना चाहिए। उनके शिष्यों ने उसी लंबे समय तक लोगों के बीच रहकर और उनकी मानसिक स्थिति समझकर धीरे–धीरे फील्डवर्क को आगे बढ़ाया। आज का मानवविज्ञान मालिनोवस्की के फील्डवर्क पर निर्धारित है। हालांकि, मालिनोवस्की ने 'पार्टीसिपेंट ऑवेजरवेशन' शब्द का प्रयोग नहीं किय था। उनका सारा अध्ययन लोगों के साथ उनकी दिनचर्या में सहभागिता करने और अधिक तथ्यों को एकत्र करने का था।

अपनी प्रगति जाँचें

7. ए.आर. रेडक्लिफ–ब्राउन ने कहाँ पर एक प्रसिद्ध फील्ड अध्ययन शुरू किया था?

   .....

   .....

   .....

8. मैलिनोवस्की के गुरू कौन थे?

   .....

   .....

   .....

9. 'स्थानीय भाषा को सीखना जरूरी नहीं है। बताईए कि यह बयान सही है या गलत?

   .....

   .....

   .....

12.5 21वीं सदी में फील्डवर्क

अभी तक हमने मानवविज्ञान के अध्ययन में फील्डवर्क की प्रासंगिकता और आवश्यकता पर चर्चा की। अब सवाल यह उठता है कि क्या हम अभी भी फील्डवर्क के पारंपरिक पैटर्न अपनाए हुए हैं या नहीं। समय के बदलाव के कारण मानवविज्ञान के फील्डवर्क में भी काफी बदलाव आए हैं। 'फील्ड' अब वो नहीं रहा जैसे पहले था, फील्ड अपने आप ही बहुत तेजी से बदल रहा है। वैश्वीकरण के इस समय में बहुत ही मुश्किल से कोई ऐसा समाज मिलेगा जो पूरी तरह अपनी संस्कृति के साथ संलिप्त हैं।

मानवविज्ञानी मुख्य रूप से कम ज्ञात समाजों के साथ संबंध रखते हैं, यद्यपि वे विकसित और विकासशील समाजों को भी ध्यान में रखते हैं। आज मानवविज्ञान में फील्डवर्क को न केवल

'दूसरों' के बल्कि 'स्वयं 'के अध्ययन के रूप में भी जाना जाता है क्योंकि मानवविज्ञानी अब अपने जीवित अनुभवों के बारे में लिख रहे हैं। आज के परिदृश्य फील्ड में एक संस्था हो सकती है, जिसमें एक संगठन है। जिसमें मानवविज्ञानी, कार्य संस्कृति व्यवहार और पैटर्न के अध्ययन पर केंद्रित है। फील्ड, शहरी या ग्रामीण हो सकता है। औपनिवेशिक फील्डवर्कर्स के काम में उभरने वाले नैतिक मुद्दों के कारण स्वदेशी मानवविज्ञानियों ने अपने ही समाज का पुनर्अध्ययन करना चाहते हैं। इसलिए मानवविज्ञानी आज अपने ही लोगों के लिए काम कर रहे हैं। वर्चुअल स्पेस (आभासी स्थान) आज मानवविज्ञानियों के लिए प्रसंग का विषय है, क्योंकि मानवजाति अपनी गतिविधियों को ऑनलाइन ले जा रहा है। इसलिए वर्चुअल स्पेस भी अब मानवविज्ञानियों के लिए फील्ड बन गया है। फील्डवर्क बहु–पक्षीय भी हो सकता है। बहु–पक्षीय फील्डवर्क में, शोधकर्ता एक से अधिक साइट में फील्डवर्क करता है जहां विषय पाया जा सकता है। भारत में हिजड़ों पर सेरेना नंदा का काम बहु–पक्षीय फील्डवर्क का एक उत्कृष्ट उदाहरण है जहां उन्होंने भारत के विभिन्न हिस्सों में रहने वाले हिजड़ों को ध्यान में रखा। मानवशास्त्रीय फील्डवर्क में एक हालिया प्रवृत्ति 'स्व' पर अध्ययन कर रही है, जिसे ऑटोइथेनोग्राफी के रूप में जाना जाता है, जहां फील्डवर्कर अपने जीवन के अनुभवों को बताता है।

अपनी प्रगति जाँचें

10. कुछ 21वीं सदी के उन स्थानों का नाम बताईए जहाँ फील्डवर्क शुरू हुआ।

.....

.....

.....

12. ''फील्डवर्क'' आभासी स्थान में मुमकिन है, यह कथन सही है या गलत?

.....

.....

.....

12.6 फील्डवर्क में नैतिकता

कार्य के दौरान नैतिक सिद्धांत ही व्यक्ति के व्यवहार का पक्ष होता है। नैतिकता, मूल रूप से एक नैतिक सिद्धांत हैं, जो किसी गतिविधि के समय स्वयं और दूसरों के प्रति, व्यक्ति के व्यवहार को नियंत्रित करती हैं। मानवविज्ञानी, फील्डवर्क में मनुष्यों के साथ बातचीत शामिल होते है जहां कई बार शोधकर्ता को संवेदनशील डेटा या जानकारी को बांटना पड़ता है। इस प्रकार नैतिक मुद्दे, मानवविज्ञान क्षेत्र में एक प्रमुख चिंतन का विषय है। नैतिकता की समस्या एक लिखित रिपोर्ट या शोध विषय के चयन तक से शुरू हो सकती है। उदाहरण के लिए फील्ड में एक तस्वीर क्लिक करते समय यह एक नैतिक मुद्दे को भी जन्म दे सकता है कि इसमें शामिल व्यक्ति की सहमति ली गई थी या नहीं। फील्डवर्क जानकारी इकट्ठा करने के शोधकर्ताओं के तरीके का एक हिस्सा है और यह फील्डवर्क ही है जो एक तरह से लोगों के जीवन में घुसपैठ करता है। इस प्रकार, एक शोधकर्ता को बहुत परिश्रमी होना चाहिए कि डेटा को कैसे एकत्र किया जाए और उसका प्रसार किया जाए। क्षेत्र में शोधकर्ता को डेटा

संग्रह से संबंधित चार बुनियादी विशेषताओं की आवश्यकता होनी हैः (क) संवेदनशील मुद्दों की गोपनीयता जो संरक्षित करना, (ख) डेटा संग्रह को शुरू करने से पहले अध्ययन के तहत लोगों की सहमति (ग) समुदाय और समाज की बेहतरी के लिए डेटा के उपयोग की चिंता करना (घ) ज्ञान और उसका संचरण, जिसमें डेटा के प्रामाणिकता को बनाए रखते हुए अपने अध्ययन को स्वदेशी ज्ञान को पेटेंट के रूप में समुदाय के अधिकार में शमिल करना हैं।

अपनी प्रगति जाँचें

12. ''मानवविज्ञानियों को तस्वीर लेने या रिकार्डिंग करने से पहले सहमति लेनी होगी, यह कथन सही है या गलत?

.....

.....

.....

12.7 सारांश

मानवविज्ञान एक फील्ड पर आधारित विषय है। मानवविज्ञान की उप–अनुशासनों में सामाजिक/सांस्कृतिक अध्ययन को जानने के भिन्न तरीके मिले हैं जिसमें फील्डवर्क बहुत महत्वपूर्ण भूमिका निभाता हैं। मानवविज्ञान के शुरूआती अध्ययनों में आर्मचेयर–मानवविज्ञानियों ने दुनिया के कोने–कोने से यात्रियों के बताए आख्यानों को तथ्य माना था, जिन्हें विभिन्न् विद्वानों ने अपनी यात्रा के दौरान प्राप्त किया। विद्वानों ने उन सूचनाओं के आधार पर सिद्धांतों का निर्माण किया। धीरे–धीरे अधिक सूचानाओं का संग्रह हुआ और महसूस हुआ की अधिक सूचना इकट्ठा करना भी समाज में बदलाव लाने में सहायता कर सकता था। ए.आर. रेडक्लिफ ब्राउन और बी. मैलिनोवस्की द्वारा किए गए क्षेत्रीयकार्य ने समाज के भौतिक परिणामों तथा तथ्य संग्रह के तरीकों में बहुत हद तक परिवर्तन ला दिया। जिसने सामाजिक/सांस्कृतिक मानवविज्ञान में होने वाले अन्वेषण को प्रगतिशील बनाने में बहुत सहायता की।

अगली इकाई में हम फील्डवर्क कैसे करें सीखेगें, साथ ही फील्ड पर जाने से पहले हमें फील्डवर्क के लिए की जाने वाली तैयारी,आचरण, फील्डवर्क का संचालन और अंत में परिणामों को प्राप्त करना सीखेगें।

12.8 संदर्भ

बर्गसन, एच.एल. एंड पॉल, एम.एम (1991). "मैटर एंड मेमोरी, (अनु.)" एन. एम. पॉल एंड डब्ल्यू एस पालमर, न्यूयार्क : जार्ज एलन एंड अनविन.

बोहानन, पी. (संपा) (1960). *अफ्रीकन होमासाइड एंड सूसाइड*, प्रीन्सेटोन, न्यू जर्सीः प्रिन्सेटोन यूनिवर्सिटी प्रेस.

कोठारी–सी. आर. (2009). *रिसर्च मैथडोलॉजी*, नई दिल्लीः न्यू ऐज इंटरनेशनल पब्लिशर्स.

मलिनोस्की, वी (1922). *अर्गोनॉट्स ऑफ द वैस्टर्न पैसिफिकः एम एकाउंट ऑफ नेटिव एंटरप्राइज एंड एडवेंचर न्यू गुएना*, लंदनः रूटलेज एंड कीगन पॉल.

रेडक्लिफ–ब्राउन, ए.आर (1922). *द अंडमान आइलैंडर्सः ए स्टडी इन सोशल एंथ्रोपोलॉजी,* कैम्ब्रिजः कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस.

साधु, ए.एन. एंड सिंट, अमरजीत (1980). *रिसर्च मैथड्स इन सोशल साइंस,* बॉम्बेः हिमालय पब्लिशिंग हाउस.

12.9 आपकी प्रगति जांच के लिए उत्तर

1. गलत
2. देखें अनुभाग 12.2
3. ई. बी. टायलर
4. एल.एच. मॉर्गन
5. डब्ल्यू.एच.आर रिवर्स एंड ए.सी. हैडेन
6. फ्रांज बोएस
7. अंडमान आइलैंडर्स
8. सी.जी. सेलीगमन
9. गलत
10. 12.5 देखें
12. सही
12. सही

इकाई 13 फील्ड वर्क करना

इकाई की रूपरेखा

13.0 प्रस्तावना

13.1 मानवविज्ञान क्षेत्र में फील्ड से क्या तात्पर्य है

13.2 फील्डवर्क हेतु तैयारी

- 13.2.1 अनुसंधान प्रकल्प तैयार करना
- 13.2.2 साहित्य की समीक्षा

13.3 फील्डवर्क के मूलतत्व

- 13.3.1 घनिष्ठता स्थापित करना
- 13.3.2 तथ्य संग्रहण
- 13.3.3 फील्ड डायरी बनाना
- 13.3.4 फील्ड गैजेट्स

13.4 फील्ड वर्क के उपरांत क्या किया जाए

- 13.4.1 तथ्य संकलन और विश्लेषण
- 13.4.2 रिपोर्ट लेखन

13.5 सारांश

13.6 संदर्भ

13.7 आपकी प्रगति की जांच करने के लिए उत्तर

अधिगम का उद्देश्य

इस इकाई को पढ़ने के उपरांत शिक्षार्थी निम्न बातों को समझने में सक्षम होंगे:

- मानव विज्ञान के क्षेत्र में फील्ड वर्क कैसे किया जाता है;
- फील्ड वर्क शुरू करने से पहले की जाने वाली तैयारियां;
- फील्ड वर्क करते समय ध्यान रखने वाली बातें; तथा
- फील्ड वर्क के उपरांत डेटा संकलन, डेटा विश्लेषण तथा रिपोर्ट लेखन का महत्व

13.0 प्रस्तावना

फील्डवर्क, मानववैज्ञानिक अध्ययन का एक अभिन्न अंग है। इससे पूर्व की इकाई में हमने आपको मानव विज्ञान के क्षेत्र में फील्डवर्क परंपरा की उत्पत्ति के साथ–साथ फील्डवर्क का इतिहास को बताने की कोशिश की और आपको उन प्रारंभिक मानव

योगदानकर्त्ता : डॉ. रूखशाना जमान, मानव विज्ञान संकाय, सामाजिक विज्ञान विद्यापीठ, इग्नू, नई दिल्ली।

वैज्ञानिकों से परिचित कराया जिन्होंने अनुभवजन्य फील्डवर्क का संचालन किया। आज के युग में फील्डवर्क मानववैज्ञानिक अध्ययन की विरासत बन चुका है। अब तक आप यही सोच रहे होंगे कि फील्डवर्क कैसे किया जाए? क्या कोई किसी गांव, किसी विद्यालय अथवा आदिवासी समाज जैसी जगहों पर जा सकता है और फील्डवर्क कर सकता है? खैर, इन सब बातों का कोई उत्तर नहीं है किसी को भी फील्डवर्क शुरू करने से पहले विस्तृत तैयारी की जरूरत होती है अतः इस इकाई में हम आपको फील्डवर्क करने के तरीकों और तैयारियों के बारे में जानकारी देंगे। यह इकाई आपको फील्डवर्क से संबंधित आवश्यकताओं को समझने में सहायक होगी जो फील्डवर्क शुरू करने से पहले जरूरी होते हैं और इसमें आपको यह भी बताया जाएगा कि फील्ड से लौटने के बाद संकलित डेटा को किस प्रकार विश्लेषण किया जाता है तथा रिपोर्ट लेखन कैसे किया जाता है। फील्ड पर जाने के लिए आवश्यक तैयारी जैसे शोध डिजाइन तैयार करने, शोध समस्या की पहचान करने, शोध प्रश्नों को समझने के लिए साहित्य समीक्षा करने, क्षेत्र में घनिष्ठता (रैपो) बनाने, डाटा संग्रहण में उपयोग की जाने वाली विधियां, क्षेत्र डायरी को बनाने जैसी मूलभूत आवश्यकता के बारे में अवगत कराया गया है। अग्रिम अनुभागों में फील्ड से लौटने के उपरांत शोधार्थी को फील्ड में से एकत्रित आंकड़ों का विश्लेषण करने और अंत में रिपोर्ट लेखन या शोध लेखन तथा रिपोर्ट लेखन प्रोजेक्ट कार्य प्रस्तुत करने आदि के बारे में इस इकाई में बताया जाएगा उचित मार्गदर्शन देने के लिए इस इकाई को तीन भागों में बांटा गया है खासतौर से फील्ड वर्क के पहले और बाद में जो भी गतिविधियां करनी है उनसे संबंधित यह भाग हैं।

13.1 मानवविज्ञान क्षेत्र में फील्ड से क्या तात्पर्य है?

फील्डवर्क के बारें में प्रारंभ करने से पहले हमें मानव वैज्ञानिक उच्चारण में 'फील्ड' शब्द के अर्थ को समझना चाहिए। जैसा कि पूर्व की इकाईयों में चर्चा की जा चुकी है कि मानवविज्ञान संबंधी अन्वे ाण अथवा मानव विज्ञान फील्डवर्क के संस्थापक सदस्यों यानी जनकों जैसे हेडन, रेडक्लिफ–ब्राउन, रिवर्स, बोआस और मालिनोव्स्की के समय से ही लोकप्रिय रहा है। इस विधा में लंबे समय तक कहीं दूर जाना होता है और "स्थायी निवासियों" के साथ रहना होता है, "बाहरी" लोगों के साथ रहना भी इसमें शामिल हैं। मालिनोव्स्की ने अपनी किताब *अर्गोनॉट्स ऑफ द वेस्टर्न पेसिफिक* में वर्णन किया है कि "स्वंय को अन्य लोगों के साथ 'व्हॉइट' लोगों की संगत से भी खुद को दूर करना होगा और जहां तक संभव हो मूल निवासियों के साथ निकट संपर्क में रहना होगा जो वास्तव में केवल गांवों में रहकर ही किया जा सकता है।" (मालिनोव्स्की, 1922:6) इन अध्ययनों ने 'अन्य' लोगों के जीवन और संस्कृति को गहराई से समझने पर अपना ध्यान केंद्रित किया जो कि संभवत 'व्हॉइट' लोग नहीं थे। क्योंकि प्रारंभिक फील्ड वर्क आमतौर पर औपनिवेशिक युग के दौरान किए गए थे, इसलिए दूसरों का तात्पर्य उन सभी समाजशास्त्रियों से है जो मानव विज्ञानी थे और जो गैर–पश्चिमी और अक्सर उपनिवेश इस स्थान के थे। हालांकि, वर्तमान समय में "दूसरे " लोग "स्वयं" के रूप में बदल गए हैं और मानवविज्ञानी अब अपने समाज में अक्सर अपने जीवन अनुभव के बारे में ही लिख रहे हैं। मानव विज्ञानी अब कोई बाहरी व्यक्ति ना होकर समाज में रहने वाला ही व्यक्ति है जो अंदरूनी सूत्र के दृष्टिकोण से अपनी कहानी को निर्मित कर रहा है। स्थानीय मानव वैज्ञानिकों द्वारा अपने समाज से संबंधित शोध करने की जरूरत अधिकतर औपनिवेशिक लेखन का सामना करने और अपने खुद के आंतरिक विचार से संबंधित कहानियों को प्रस्तुत करने के लिए महसूस की गई है। यहां तक कि दूसरे समाजों का अध्ययन करते समय सूचना देने वाले अथवा अध्ययन किए जा रहे लोगों को कथानकों के

रूप में सबसे अधिक सम्मिलित किया जाता है। इसके कारण वर्तमान समय में फील्ड की अवधारणा और विचार में अत्यधिक बदलाव हुआ है। 21वीं सदी में मानवविज्ञान के क्षेत्र में फील्ड कोई संगठन अथवा संस्था या ग्रामीण या शहरी स्थान या आभासी दुनिया नहीं है अपितु वह अपने लोग अपना गांव और परिवार भी हो सकता है। कोई मानवविज्ञानी एक से अधिक स्थानों पर कार्य कर सकता है जिसे सामान्यतः बहुपक्षीय फील्डवर्क के रूप में जाना जाता है। स्वयं के बारे में शोध करने की इस वर्तमान प्रवृत्ति को ऑटो–एथनोग्राफी के रूप में जाना जाता है। अतः मानव वैज्ञानिक संदर्भ में फील्ड कोई भी वह स्थान हो सकता है जो मानव गतिविधियों से जुड़ा हो और वह कहीं भी अवस्थित हो सकता है।

13.2 फील्डवर्क की तैयारी

अब हम इस बात की चर्चा करेंगे की कोई किस प्रकार फील्ड वर्क की तैयारी करता है। कोई यूं ही किसी स्थान का चयन नहीं कर सकता है, न ही फील्डवर्क करने के लिए किसी स्थान पर जा सकता है। अपितु, फील्डवर्क करने के लिए सर्वप्रथम योजना निर्मित की जाती है और इस फील्डवर्क की योजना में कई चरण और स्थल शामिल होते हैं। इसके लिए सबसे पहले फील्वर्क करने की प्रासंगिकता का आकलन करना होता है। किसी शोधकर्ता को मूल प्रश्नों के उत्तर पहले खोजने होते हैं कि फील्ड अध्ययन क्यों किया जाए ,फील्ड अध्ययन कहां पर किया जाए और फील्ड अध्ययन कैसे किया जाए। इस खंड में इन सब बातों की चर्चा की गई है कि एक अनुसंधानकर्ता फील्डवर्क के लिए क्या–क्या तैयारियां करें। फील्डवर्क से संबंधित विभिन्न चरणों की यहां विस्तृत चर्चा की जाएगी।

13.2.1 अनुसंधान प्रकल्प तैयार करना

सर्वप्रथम यह जरूरी है कि हमें फील्डवर्क करने के प्रत्येक चरण की एक विस्तृत योजना और समझ होनी चाहिए। अतः प्रारंभिक चरण यह है कि अनुसंधान किस प्रकार किया जाना है उसके लिए एक शोध–प्रकल्प था अनुसंधान डिजाइन को तैयार किया जाए जो कि कदम दर कदम हमारा मार्गदर्शन करें। शोध प्रकल्प, वह ढांचा होता है जो हमें इस बारे में बताता है कि शोध किस प्रकार किया जा रहा है। अनुसंधान डिजाइन में अनुसंधान के मूल उद्देश्य शामिल होते हैं जैसेकि अनुसंधान कैसे किया जाएगा और यह अनुसंधान किस स्थान पर किया जाएगा तथा अनुसंधान में कौन सी तकनीकों और उपकरणों तथा विधियों का प्रयोग किया जाएगा। फील्ड से एकत्र किए गए आंकड़ों का संकलन और विश्लेषण किस प्रकार किया जाएगा। आइए एक ग्राफ के माध्यम से हम अनुसंधान डिजाइन तैयार करने में इस्तेमाल होने वाले विभिन्न चरणों को समझने का प्रयास करते हैं।

इस आरेख को देखकर यह स्पष्ट होता है कि फील्ड वर्क के लिए प्रथम और महत्वपूर्ण आवश्यकता शोध प्रश्न का होना है। फील्ड वर्क शुरू करने से पहले शोधकर्ता को पहले किसी समस्या की पहचान करने की जरूरत होती है जिसके आधार पर अनुसंधानकर्ता किसी परिकल्पना को निर्मित कर सकता है। कोई प्रकल्पना उन चरों के मध्य एक स्थाई संबंध होता है जिसे हम फील्ड के रूप में देखते हैं। हालांकि, गुणात्मक अनुसंधान के लिए परिकल्पना का सूत्रीकरण आवश्यक मानदंड नहीं है। क्योंकि, यह एक खोज पूर्ण शोध हो सकता है। कोई परिकल्पना तैयार करने से पहले यह यह आवश्यक है कि अनुसंधान के अभिप्राय और उद्देश्यों का वर्णन किया जाए। इस प्रकार यह अनुसंधान क्यों जरूरी है और इसका भी वर्णन किया जा सकता है। मानव वैज्ञानिक अनुसंधान के रूप में इसे किस प्रकार उचित बताया जा सकता है।

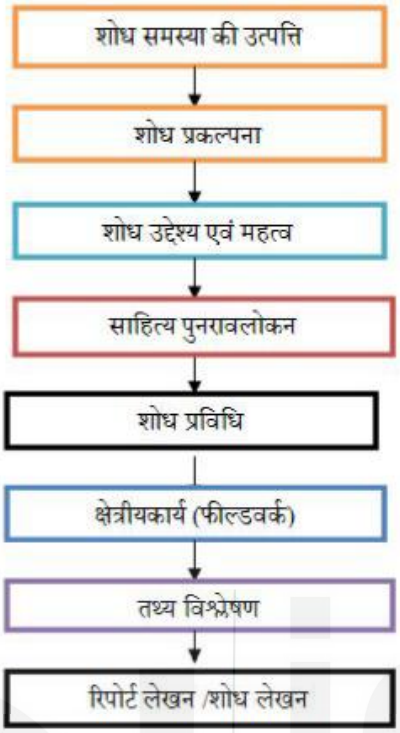

किसी भी अनुसंधानकर्ता के लिए यह जरूरी है कि उसे उस यूनिवर्स(भौतिक ब्रहमांड) अथवा लोगों की पहचान करनी चाहिए जिनके बारे में अनुसंधान किया जाना है। यूनिवर्स, कोई वास्तविक भौतिक क्षेत्र हो सकता है। उदाहरण के लिए, कोई गांव या शहरी क्षेत्र अथवा फुटबॉल खिलाड़ियों की जनसंख्या भी हो सकती है। अनुसंधान एक साथ कई स्थानों पर किए जा सकते हैं जैसे, कोई अपनी यात्रा के दौरान प्रवासियों के बारे में शोध कर सकता है। यूनिवर्स का चयन प्रत्यक्ष रूप से और तार्किक रूप से समस्या की प्रकृति से संबंधित है। वास्तव में यूनिवर्स व क्षेत्र है जिसे हम उस समय संदर्भित करते हैं जब हम फील्डवर्क शब्द का उपयोग करते हैं ।

इसके उपरांत मौजूदा साहित्य की समीक्षा को साहित्य समीक्षा के नाम से जाना जाता है। साहित्य की समीक्षा अनुसंधानकर्ता को उस प्रकार के कार्य को समझने में सहायता करती है जो पहले से ही उस विषय के बारे में किए गए हैं। साहित्य समीक्षा से अनुसंधानकर्ताओं को उन कमियों की जानकारी मिलती है जिससे अनुसंधानकर्ताओं को अधिक सार्थक शोध करने में सहायता मिलती है। विषय के बारे में मौजूदा साहित्य को एकत्रित करने के उपरांत अगला चरण अनुसंधान पद्धति को निर्मित करना है, जिसमें अनुसंधानकर्ता किस प्रकार अनुसंधान कार्य को अंजाम देगा। अनुसंधान प्रविधि का निर्माण हमें यह जानकारी देता है कि फील्डवर्क किस प्रकार किया जाएगा और किस प्रकार तथ्य संग्रहण(डेटा) किया जाएगा। डेटा का संग्रहण और विश्लेषण अनुसंधान डिजाइन का अगला चरण है जो अंततः रिपोर्ट लेखन की ओर जाता है। अनुसंधान डिजाइन को किस प्रकार बनाया जाए और क्षेत्र यानि फील्ड में इसे किस प्रकार निष्पादित किया जाए इसके बारे में आगे के अनुभवों में चर्चा की जाएगी। इस अनुभाग में किसी अनुसंधान समस्या की पहचान करने और साहित्य की समीक्षा करने के बारे में चर्चा की जा रही है क्योंकि, इन चरणों को फील्डवर्क पर जाने से पहले पूरा करना की आवश्यकता होता है।

13.2.1.1 शोध समस्या की पहचान करना

फील्डवर्क करने के लिए पहली शर्त यह है कि किसी शोध समस्या या प्रश्न की पहचान की जाए। कोई शोध प्रश्न क्या है और हम शोध प्रश्न की पहचान किस प्रकार करते हैं, ऐसे कौन से मानदंड या मानक हैं जिन पर शोध प्रश्न बनाते समय ध्यान देने की जरूरत होती है, इन सब बातों की चर्चा इस अनुभाग में की जाएगी। शोध प्रश्न, किसी भी विषय से संबंधित हो सकते हैं जो कि प्रासंगिक हो, उचित हो और मनुष्य से संबंधित हो। उदाहरण के लिए दैनिक मजदूरों के बड़े शहरों में प्रवास के पैटर्न को शोध प्रश्न के रूप में लिया जा सकता है। शोधकर्ता द्वारा शोध समस्या के प्रत्येक बिंदु को परिभाषित करना चाहिए और उसकी अवधारणा को स्पष्ट करना चाहिए। उदाहरण के लिए, पहले हमें दैनिक मजदूरों की अवधारणा को परिभाषित करना चाहिए। वे किस प्रकार के कार्य करते हैं , उनकी आजीविका की प्रवृत्ति कैसी है , और यह भी कि प्रभाव से क्या तात्पर्य है, इन सभी बातों का विस्तृत वर्णन किया जाना चाहिए। शोधकर्ता ने जिस साहित्य का अध्ययन किया है वह भी इस संबंध में सहायक सिद्ध होगा। शोध प्रश्न के अंतर्गत हमें सबसे पहले यह समझने की जरूरत है कि हम प्रवास पैटर्न का अध्ययन क्यों करना चाहते हैं तथा हम प्रवास पैटर्न शब्द का उपयोग क्यों कर रहे हैं। जैसा कि, हम सभी जानते हैं कि प्रवासन एक घटना है, अनादि काल से प्रवसन होता आया है। लोग नई जगह पर भोजन और काम की तलाश में एक स्थान से दूसरे स्थान पर जाते रहे हैं। हालांकि, जब हम प्रवास पैटर्न कहते है तब हम मूल रूप से प्रवास प्रथा को देख–सुन रहे होते हैं, जैसे कि मौसमी प्रवास आदि। किसी शोध समस्या की पहचान किए जाने के उपरांत अनुसंधानकर्ता के लिए अगला चरण इस क्षेत्र में विद्वानों द्वारा पहले से किए गए शोध कार्यों को देखना और समझना है। शोध समस्या की पहचान अनुसंधानकर्ता की हितों के साथ गहन रूप से जुड़ी हुई है भले ही वह खोजपूर्ण अनुसंधान हो अथवा क्रियात्मक अनुसंधान या विशुद्ध रूप से विश्लेषणात्मक सैद्धांतिक अनुसंधान हो।

13.2.2 साहित्य की समीक्षा

जब हम अपने अध्ययन के लिए किसी शोध समस्या का चयन अथवा पहचान कर लेते हैं तब हमें एक पृष्ठभूमि की आवश्यकता होती है कि, संबंधित क्षेत्र में कौन–कौन से दूसरे शोध किए गए हैं जिसे हम साहित्य समीक्षा के रूप में जानते हैं। साहित्य की समीक्षा यह समझने में सहायता करती है कि दूसरे शोधकर्ताओं द्वारा शोध समस्या को किस प्रकार से देखा, समझा गया है और इसमें क्या कमियां रह गई हैं। यह मूल रूप से हमारे शोध कार्य को मजबूती प्रदान करता है और पुनरावृतियों को दूर करने में हमारी सहायता करता है। उदाहरण के लिए यदि, हम फेसबुक और वर्चुअल फ्रेंड्स जैसे विषय को लेते हैं और इस प्रोजेक्ट पर कार्य करना शुरू करते हैं तब उसी विषय पर साहित्य के बारे में खोज किए बिना हम किसी दूसरे व्यक्ति द्वारा किए गए अनुसंधान की नकल कर सकते हैं, जो किसी पहिए को पुनः घुमाने जैसा ही होगा। इसलिए साहित्य समीक्षा उस कार्य को रेखांकित करती है जो पहले से किया जा चुका है तथा जिससे दूसरे अध्ययनों की कमियों के आधार पर शोध प्रश्न तैयार करने में सहायता मिलती है।

जैसा कि वर्तमान संसार में किसी भी वस्तु और व्यक्ति के बारे में पता लगाया जा सकता है और ऐसी स्थिति में अनुसंधानकर्ता के लिए यह चुनौती है कि वह कमियों को खोजें और उन क्षेत्रों का पता लगाएं कि जिन पर अधिक ध्यान देने की जरूरत है, जिन्हें एक अलग दृष्टिकोण से देखा जा सकता है। एक सैद्धांतिक दृष्टिकोण की पहचान करने में भी इससे हमें सहायता

मिलती है जिसका उपयोग हम आगे कर सकते हैं। यह अवधारणाओं को परिभाषित करने एवं समझने में भी हमारे लिए मार्गदर्शक की भूमिका अदा कर सकते हैं।

अधिकांश समय साहित्य की समीक्षा नैतिक स्तरों पर की गई है जिसे गुणात्मक शोध करते समय इसे अनुचित बताया गया है। ऐसा तर्क फील्ड के बारे में पूर्व विचार रखने में जन्मा था। यदि कोई व्यक्ति, फील्ड वर्क प्रारंभ करने से पहले साहित्य की समीक्षा करता है तो फील्ड के प्रति शोधकर्ता के विचार पूर्वाग्रही हो सकते है। हालांकि, वैज्ञानिक अनुसंधान कार्यों के दौरान शोधकर्ता द्वारा इसे समय, ऊर्जा और धन खर्च करने के संबंध में नकार दिया ,क्योंकि इससे पहले से मौजूद डेटा और जानकारी की प्रतिकृति और दोहराव होने की संभावना होती है। किसी अनुसंधानकर्ता को उस स्तर पर कार्य शुरु करना चाहिए जिसके बारे में दूसरे अनुसंधानकर्ताओं द्वारा शोध नहीं किया गया है। इसलिए साहित्य की समीक्षा हेतु पिछले शोध कार्य के बारे में ज्ञान अर्जित करना आवश्यक है। साहित्य समीक्षा भी अपने आप में एक सतत प्रक्रिया है, इसलिए अनुसंधानकर्ता को उन सभी कार्यों के बारे में जानकारी होनी ही चाहिए जो फील्डवर्क की अवधि के दौरान भी किए जा रहे हैं। इसमें दूसरे विषयों के साहित्य को भी सम्मिलित करने की जरूरत होती है जिससे अनुसंधानकर्ता यह समझ सकाता है कि उक्त विषय को अन्य विषयों में किस प्रकार देखा और समझा जाता है। जैसे कि कोई अर्थशास्त्री अथवा सामाजिक कार्यकर्ता प्रवासन को किस दृष्टिकोण से देखेगा। फील्डवर्क पूरा करने के बाद भी साहित्य समीक्षा की आवश्यकता होती है क्योंकि, उस अवधि के दौरान कई नए शोध कार्य प्रकाशित हो चुके होते हैं। इसलिए हरदम यह सलाह दी जाती है कि प्रचलन में नवीनतम ज्ञान की जानकारी रखना चाहिए और किसी के अनुसंधान कार्य से जितना और जहां तक संभव हो उतना अपने शोध में शामिल करना चाहिए और साथ ही किसी प्रकार के दोहराव और नकल से भी बचना चाहिए।

अपनी प्रगति की जांच करें

1. फील्ड वर्क से आपका क्या तात्पर्य है?

   .....

   .....

   .....

2. मानवविज्ञान में फील्ड का क्या अर्थ है

   .....

   .....

   .....

3. ऐसी कुछ स्थानों को सूचीबद्ध करें जहां पर मानववैज्ञानिक फील्डवर्क कर सकते हैं।

   .....

   .....

   .....

   .....

4. "मानव वैज्ञानिक साहित्य की समीक्षा नहीं करते हैं " यह कथन सही है अथवा गलत, इसका उल्लेख करें।

.....

.....

.....

13.3 फील्डवर्क के मूलतत्व

जब शोध समस्या की पहचान कर ली जाती है तब साहित्य समीक्षा से प्राप्त की गई कमियों का विश्लेषण कर अध्ययन के लिए अभिप्राय और उद्देश्य निर्मित किए जाते है। मानववैज्ञानिक सिद्धांत की प्रकृति और अनुशासन के लक्ष्यों के लिए यह जरूरी है कि शोधार्थी, क्षेत्रीयकार्य (फील्डवर्क) करें। मानव विज्ञानी किसी क्षेत्र में क्या करते हैं? अनुसंधान डिजाइन द्वारा निर्मित समस्या के अभिप्राय और उद्देश्य से संबंधित आंकड़ों का संग्रहण मानव विज्ञानियों द्वारा किया जाता हैं। आइए इस अनुभाग में हम इस बात को जानेंगे कि कोई मानव विज्ञानी किसी फील्ड में किस प्रकार पहुंचता है और अध्ययन के अंतर्गत लोगों के साथ घनिष्ठतापूर्वक रहते हुए जानकारी को किस प्रकार एकत्रित करता है।

13.3.1 घनिष्ठता (रेपो) स्थापित करना

रैपोर्टर एक प्राचीन फ्रांसीसी शब्द है जिसका शाब्दिक अर्थ 'वापस लाना' होता है। (Webster-com) फील्ड वर्क में घनिष्ठता स्थापित करना एक महत्वपूर्ण प्रक्रिया है, जिसके द्वारा मानव विज्ञानी किसी समुदाय अथवा यूनिवर्स तक पहुंचते हैं और सूचना और आंकड़ों को एकत्रित करने में सक्षम हो पाते हैं। घनिष्ठता का उद्देश्य लोगों के साथ सौहार्दपूर्ण और मैत्रीपूर्ण संबंध को स्थापित करना है। घनिष्ठता स्थापित करने से दो अथवा दो से अधिक व्यक्तियों के बीच भरोसे, मान्यता और विश्वास के सृजन में सहायता मिलती है जो दोनों के लिए सूचना के आदान–प्रदान को सुविधाजनक बनाता है। तब यहां यह सवाल उठता है कि घनिष्ठता स्थापित किस प्रकार की जाए।

आइए एक उदाहरण को देखते हैं, आप यह माने कि आप किसी सड़क पर चल रहे हैं और कोई व्यक्ति वहां आकर अचानक आपसे आपका नाम और उम्र आदि पूछने लगता है। वह अचानक आपसे यह कहने लगता है कि जरा अपना हाथ तो बढ़ाइए मुझे आपकी उंगली में सुई चूभोकर आपके खून का सैंपल एकत्रित करना है। ऐसी स्थिति में आप क्या महसूस करेंगे? क्या आप उस व्यक्ति के प्रश्नों का उत्तर देंगे या उस व्यक्ति को अपने हाथ से अपने खून का सैंपल एकत्रित करने की अनुमति देंगे? ऐसी स्थिति में आप को खतरा महसूस होगा और आप असहज भी महसूस करेंगे।

दूसरे मामले में यदि वही व्यक्ति पहले अपना परिचय देता है और खून के सैंपल को एकत्र करने के पीछे अपने उद्देश्य को आपसे साझा करता है। और आपकी इस बारे में सहमती लेता है कि आप खून का सैंपल देंगे या नहीं या उसके प्रश्नों के उत्तर देने के लिए क्या कुछ समय निकालेंगे या नहीं तब, आपको अधिक सुविधा महसूस होगी और आप उसके प्रश्नों का उत्तर बिना किसी भय अथवा असुविधापूर्वक देने के स्थान पर निडर होकर सुविधाजनक ढंग से दे सकते हैं। जब हम फील्ड में होते हैं तब हमपर भी यही बातें लागू होती हैं। हम फील्ड में जाकर धड़ाधड़ अपने सवालों को लोगों से नहीं पूछ सकते। इसके लिए जरूरी है कि हम उन

लोगों को पहले अपना परिचय दें और अपने वहां आने का उद्देश्य बताएं और सबसे जरूरी यह है कि हम लोगों से घनिष्ठता बढ़ाएं। जैसे ही हम उनकी अनुमति ले लेते है और उनका भरोसा जीत लेते हैं तब हम अपना फील्डवर्क शुरू कर सकते हैं। घनिष्ठता स्थापित करने की यही प्रक्रिया है जहाँ हम अपने सूचनादाताओं के साथ समय बिताते हैं और उन्हें यह मौका देते हैं कि वे हमारे कार्यों को समझ सकें। घनिष्ठता स्थापन द्विपक्षीय प्रक्रिया है ,जहाँ पर फील्डवर्कर का भी प्रेक्षण किया जाता है और फील्ड के लोगों द्वारा उससे भी सवाल किए जाते हैं। यह वह समय होता है जब अनुसंधानकर्ता लोगों के रीति–रिवाजों, आदतों और जीवनशैली के बारे में सीखता है ताकि वह लोगों के साथ स्वत्रंत्र रूप से इधर उधर घूम सकें। घनिष्ठता स्थापन की अवधि में बहुत से मानवविज्ञानी स्थानीय भाषा का प्रयोग करते हैं। घनिष्ठता स्थापन एक सतत प्रक्रिया है तथा फील्डवर्क की पूरी अवधि के दौरान शोधकर्ता के लिए यह जरूरी होता है कि वह जवाब देने वालों के साथ अपने भरोसेपूर्ण संबंध को स्थापित करे और उनके बारे में ठीक से जाने। सबसे सफल घनिष्ठता स्थापन वह होता है जिसमें अनुसंधानकर्ता कोई सवाल पूछे बगैर अथवा बातचीत किये बगैर दूसरों को भलीभांति जान जाए। वास्तविकता यह है की ऐसा कोई क्लास अथवा लेक्चर नहीं है जिसके माध्यम से फील्डवर्कर को फील्ड में जिन स्थितियों का सामना करना पड़ता है उसके बारे में उसे पूरी तरह से तैयार किया जा सके। प्रत्येक फील्ड अपने आप में अद्वितीय होता है और फील्ड में प्रत्येक दिन नई किस्म की चुनौतियों और जवाबों का सामना करना पड़ता है, यह फील्ड (क्षेत्र) अप्रत्याशित रूप से प्रत्याशित है। (चन्ना, 2015)

13.3.2 तथ्य संग्रहण

स्थानीय लोगों अथवा समुदायों से घनिष्ठता स्थापित कर लेने के पश्चात हम उनके अध्ययन के लिए जाते हैं। जब अगला कार्य तथ्य संग्रहण करना है। फील्ड में प्राथमिक डेटा संग्रहित किया जाता है जिसमें सूचना देने वालों से प्रत्यक्ष तौर पर बातचीत की जाती है। डेटा संग्रहण हेतु फील्ड में मानवैविज्ञानियों द्वारा जिस उपकरण का इस्तेमाल किया जाता है वह मुख्यतः प्रेक्षण(अवलोकन) और तदुपरान्त साक्षात्कार होता है।

प्रेक्षण (अवलोकन) : प्रेक्षण दो प्रकार के होते हैं। (क) प्रतिभागी प्रेक्षण और (ख) गैर–प्रतिभागी प्रेक्षण। जैसा कि हमने पिछली ईकाई में यह जाना है कि प्रतिभागी प्रेक्षण की शुरुआत मालिनोवस्की से शुरू हुई जिन्होने अध्ययन के दौरान सामुदायिक गतिविधियों में भाग लिया और उनके बीच रहने का प्रयास किया। इसके विपरीत गैर–प्रतिभागी प्रेक्षण में अनुसंधानकर्ता समुदाय से दूर रहकर समुदाय की गतिविधियों का अवलोकन करता है और वह प्रत्यक्ष रूप से समुदाय से घुलता–मिलता नहीं है। ज्यादातर मामलों में फील्ड में अनुसंधानकर्ताओं द्वारा प्रेक्षण को अर्द्ध–प्रतिभागी प्रेक्षण के रूप में जाना जाता है क्योंकि कई बार शोधकर्ता के लिए यह संभव नहीं होता कि वह फील्ड की स्थितियों से प्रत्यक्ष रूप से जुड़े। उदाहरणस्वरूप, आप किसी शादी समारोह में शामिल होकर शादी से जुड़े रीति–रिवाजों का अध्ययन कर सकते हैं। अनुसंधानकर्ता के रूप में आप यह देख सकते हैं कि शादी के दौरान पंडित द्वारा मंत्रों का उच्चारण किया जाता है और दूसरे रीति–रिवाजों को निभाया जाता है तथा दूल्हा–दुल्हन की सहभागिता अलग–अलग रीति–रिवाजों में होती है। यहाँ हालांकि, अनुसंधानकर्ता प्रत्यक्ष रूप से प्रेक्षण करता है तथापि यह उसकी पूर्ण प्रतिभागिता नहीं है क्योंकि मंत्रो का उच्चारण उसके द्वारा न होकर पंडित द्वारा किया जाता है और दूल्हा–दुल्हन द्वारा विभिन्न रीति–रिवाजों को निभाया जाता है और वे शादी संबंधी प्रतिज्ञा को ग्रहण करते हैं।

साक्षात्कार : साक्षात्कार करने के कई तरीके हैं और साक्षात्कार कई प्रकार के हो सकते हैं। (क) प्रत्यक्ष साक्षात्कार तथा (ख) अप्रत्यक्ष साक्षात्कार, साक्षात्कार की दो मूलभूत तकनीके हैं। प्रत्यक्ष साक्षात्कार में अनुसंधानकर्ता सूचना देने वालों से प्रत्यक्ष रूप से मिलता है और आमने–सामने बैठकर साक्षात्कार लेता है। जबकि अप्रत्यक्ष साक्षात्कार में अनुसंधानकर्ता अपने प्रश्नों को सूचना देने वालों तक ई–मेलध्डाक द्वारा भेज सकता है अथवा विडियो कॉन्फ्रेंसिंग अथवा वेब या दूरभाष के माध्यम से साक्षात्कार ले सकता है। फील्डवर्क के दौरान चूंकि, अनुसंधानकर्ता फील्ड में ही मौजूद रहता है इसलिए वहाँ पर प्रत्यक्ष साक्षात्कार लेना ही आदर्श स्वरूप होता है। जीवन इतिहास, केस अध्ययन और फोकस समूह चर्चा साक्षात्कार के दूसरे तरीके हैं जिनका प्रयोग अनुसंधानकर्ता समस्या की पहचान करने के आधार पर करता है। इन पहलुओं की विस्तृत चर्चा अगली इकाई में की जाएगी।

साक्षात्कार लेने की तकनीक : साक्षात्कार लेने के लिए हमें व्यवस्थित दृष्टिकोण को अपनाना होता है इसके लिए प्रश्न पहले से तैयार कर लिए जाते है ताकि अनुसंधानकर्ता, साक्षात्कार लेने के दौरान सूचनादाता से तर्क–संगत सूचनाओं को प्राप्त कर सके। अनुसंधानकार्य की जरूरत के अनुसार विभिन्न प्रकार के साक्षात्कार–अनुसूची और नियम बना लिए जाते हैं।

प्रत्यक्ष साक्षात्कार के लिए अनुसंधानकर्ता द्वारा या तो संरचनात्मक साक्षात्कार अनुसूची अथवा गैर–संरचनात्मक साक्षात्कार अनुसूची तैयार कर ली जाती है। संरचनात्मक साक्षात्कार अनुसूची में निश्चित प्रश्नों के प्रारूप होते हैं जिनका प्रयोग अनुसंधानकर्ता साक्षात्कार के दौरान करता है। गैर–संरचनात्मक साक्षात्कार नियम का इस्तेमाल साक्षात्कार लेने के लिए उन स्थितियों में किया जाता है जहां निश्चित प्रारूपों का इस्तेमाल नहीं होता है तथा साक्षात्कार स्वतंत्र रूप से लिए जाते हैं। वर्चुअल स्पेस में साक्षात्कार लेने हेतु प्रश्नावली का इस्तेमाल किया जाता है। प्रश्नावली में वस्तुनिष्ठ प्रश्नों के निश्चित प्रारूप होते हैं जिनका जवाब प्रतिवादी को देना होता है और वह भी 'हाँ' अथवा 'नहीं' के माध्यम से। प्रश्नावली में वर्णात्मक किस्म के प्रश्न नहीं होते हैं, हालांकि वर्तमान समय में यह प्रवृति बदल रही है और कई लोग वर्णात्मक प्रश्नों को भी शामिल कर रहे हैं।

13.3.3 फील्ड डायरी बनाना

फील्ड डायरी, अनुसंधानकर्ता के लिए मित्र समान होती है, यह वह डायरी होती है जिसमें कोई अनुसंधानकर्ता अपने मन की बातों को लिख सकता है और यही नहीं वह फील्ड में किए जाने वाले दिन–प्रतिदिन की गतिविधियों और उनके बारे में अपनी समझ का वर्णन इसमें कर सकता है। फील्डवर्क के दौरान यह जरूरी होता है कि अनुसंधानकर्ता द्वारा फील्ड डायरी बनाई जाए। इसके पीछे मूल कारण यह है कि हम फील्ड में लगभग एक सप्ताह से लेकर कुछ महीनों तक का समय बिताते हैं और हम यदि दिन–प्रतिदिन की गतिविधि के बारे में दैनिक रूप से लिखकर न रखें तो कुछ समय बाद हम प्रत्येक दिन की बातों को भूल जाएंगे। जब हम फील्ड से लौटते हैं और डेटा संकलन प्रारंभ करते हैं तब फील्ड डायरी हमारे लिए सहायक सिद्ध होती है। जैसे ही हम डायरी के पेजों को देखते हैं तब वे हमें बहुत सारी घटनाओं और गतिविधियों का स्मरण होता हैं, अन्यथा जीवन के दिन–प्रतिदिन की भागदौड़ में हम उन सब को भूल सकते हैं। फील्ड नोट ,हमें बाद में स्मृतियों के माध्यम से फील्ड से जुड़ी बातों को याद दिलाते हैं जो कि फील्ड रिपोर्ट अथवा परियोजना अथवा शोधकार्य लेखन में अत्यधिक सहायता करते हैं।

अतः अगला सवाल यह उठता है कि फील्ड डायरी किस प्रकार बनाई जाए? क्या हम रोज–रोज की घटनाओं अथवा गतिविधियों को लिखें? खैर, हरदम यह सलाह दी जाती है कि दिन बीतने के बाद शाम को पूरे दिन की गतिविधियों के बारे में डायरी में लिखा जाए। यह कार्य अनुसंधानकर्ता उस समय करे जब वह एकांत में हो और वह पूरे दिन की गतिविधियों को याद कर सके। साक्षात्कार के समय यदि हम डायरी में लिखते रहेंगे तो इससे सूचना देने वाले का ध्यान बंट सकता है और वार्तालाप का प्रवाह बाधित हो सकता है। यही नहीं यदि हम साक्षात्कार के पूरे समय अपनी डायरी में ही लिखते रहेंगे तो वार्तालाप के दौरान सूचना देने वाले के चेहरे के हाव–भाव को हम नहीं देख पाएंगे। साक्षात्कार के दौरान अवलोकन की भी महत्वपूर्ण भूमिका होती है क्योंकि, वार्तालाप के दौरान चेहरे के हाव–भाव व्यक्ति की आंतरिक भावनाओं को व्यक्त करते हैं। हालांकि, हमें साक्षात्कार के दौरान उन बातों को अवश्य ही लिख लेना चाहिए जिन्हें हम सूचनादाता के शब्दों में हू–ब–हू लिखना चाहते हों। इसलिए यह सलाह दी जाती है कि फील्ड वर्क के दौरान फील्ड डायरी अवश्य बनाई जाए क्योंकि फील्ड डायरी अनुसंधानकर्ता द्वारा फील्ड में बिताए गए समय को प्रतिबिम्बित करती है।

13.3.4 फील्ड गजेट्स

फील्ड में अनुसंधानकर्ता न केवल फील्ड डायरी को ही ले जाता है अपितु, वह कुछ उपकरण भी ले जाता है ताकि वह डेटा को संग्रहीत कर सके, जैसे कि कैमरे द्वारा स्टिल फोटोग्राफी लेना अथवा साक्षात्कार हेतु विडियो रिकॉर्डर या आडिओ रिकॉर्डर का इस्तेमाल करना। एक अनुसंधानकर्ता के लिए यह जरूरी होता है कि वह इन उपकरणों का इस्तेमाल सावधानीपूर्वक करे और इस का पहला चरण यह है कि सबसे पहले वह सूचना देने वाले की सहमति ले ले कि उसकी बातों को फिल्मांकित किया जा रहा है अथवा उसकी बातों को साक्षात्कार के दौरान रिकॉर्ड किया जा रहा है। इन उपकरणों का इस्तेमाल पूरी तरह से सूचना देने वाले की सहमति पर निर्भर करता है, यदि साक्षात्कार लेने के दौरान कभी भी साक्षात्कारदाता यह कहे कि उसकी बातों को फिल्मांकित न किया जाए अथवा उसकी बातों को रिकॉर्ड न किया जाए तब अनुसंधानकर्ता को उसी समय उसकी बात मान लेनी चाहिए। स्टिल फोटोग्राफी का इस्तेमाल सदैव होता आया है। तथापि ,दृश्य(विजुअल) मानवविज्ञान ने आज अनुसंधानकर्ताओं हेतु नए रास्ते खोल दिये है जिसमें वह लोगों के जीवन का दस्तावेजीकरण कर सके।

अपनी प्रगति की जांच करें

5. मानवविज्ञान का सार तत्व क्या है?

.....

.....

.....

6. घनिष्ठता स्थापन से क्या तात्पर्य है?

.....

.....

.....

7. क्या फील्ड वर्क के दौरान हमें कोई फील्ड डायरी बनानी चाहिए?

.....

.....

.....

8. ' मानवविज्ञानी डाटा संग्रहण हेतु स्टिल फोटोग्राफी, आडिओ–विडियो टेप रिकॉर्डर का इस्तेमाल करते हैं।' यह कथन सही है या गलत, इसकी व्याख्या करें।

.....

.....

.....

13.4 फील्डवर्क के उपरांत क्या कार्य किए जाए

अब तक हम फील्डवर्क और डेटा संग्रहण के बारे में चर्चा कर रहे थे। इस अनुभाग में हम इस बात की चर्चा करेंगे कि जिन सूचनाओं और आंकड़ों को हमने एकत्रित किया है उसे क्या करना है। इस भाग में इस बात की चर्चा की जाएगी की डेटा को किस प्रकार संकलित करना है और उनका किस प्रकार विश्लेषण करना है तथा डेटा विश्लेषण के उपरांत रिपोर्ट किस प्रकार से तैयार करनी है।

13.4.1 तथ्य संकलन और विश्लेषण

फील्ड में हम बहुत प्रकार के तथ्यों को एकत्रित करते हैं जिसमें पहली समस्या यह आती है कि उन्हें किस प्रकार शोध के अनुरूप छांटा जाए। अनुसंधान प्रकल्प पर भरोसा करते हुए हमें सबसे पहले गुणात्मक और मात्रात्मक डेटा को अलग–अलग करना होगा। गुणात्मक और मात्रात्मक डेटा को इसलिए अलग–अलग देखना होगा क्योंकि उनके विश्लेषण की प्रक्रिया भी भिन्न भिन्न होती है। आइए सबसे पहले जल्दी से हम इस बात को जाने और समझे कि गुणात्मक और मात्रात्मक डेटा का क्या तात्पर्य होता है। मात्रात्मक डेटा वह होती है जिसमें संख्याएं होती हैं जैसे कि लोगों के घरों की संख्या, गांव में रहने वाले लोगों की संख्या, विद्यालय जाने वाले बच्चों की संख्या इत्यादि। गुणात्मक डाटा गुणों को रेखांकित करती है जिन्हें मात्रिक रूप से नहीं गिना जा सकता। इसमें विस्तृत तथ्य या वर्णनात्मक तथ्य भी शामिल होते है। उदाहरण के लिए, यदि कोई अनुसंधानकर्ता भोपाल गैस कांड के प्रभावी लोगों लोगों की बातों से भावुक हो जाता है जो कि, 1980 के दशक में घटी थी। इस प्रकार सूचनादाताओं के भावात्मक अनुभव जो उनके द्वारा दिए जाते है उसे मात्रात्मक रूप से व्यक्त नहीं किया जा सकता। इसलिए इसका वर्णन लिखित रूप में सूचना देने वालों के माध्यम से किया जा सकता है जो इस घटना से भावात्मक रूप से जुड़े होते हैं, इसमें अनुसंधानकर्ता के अवलोकन, अर्थ और परीक्षण को भी शामिल किया जाता है जो उस स्थान या उन लोगों के बारे में देखता और समझता है। अनुसंधानकर्ता द्वारा देखा गया कार्य निष्पादन किस प्रकार से होता या उन लोगों के जीवन के तरीकों का वर्णन शामिल हो सकता है कि वे किस प्रकार किसी स्थिति का सामना करते हैं, वे किस प्रकार का विचार अपने मन में रखते हैं, इत्यादि।

विभिन्न प्रकार के विश्लेषणात्मक उपकरणों का प्रयोग करके मात्रात्मक आंकड़ों को क्रमबद्ध और विश्लेषित करने की आवश्यकता होती है। पहले इसे मैनुअल रूप से किया जाता था

जिसमें सांख्यिकीय के सूत्रों का इस्तेमाल किया जाता था और रेखा चित्र बनाए जाते थे। हालांकि, आज के कंप्यूटर युग में हमारे पास स्टैटिकल पैकेज जैसे एस.पी.एस.एस (SPSS) सॉफ्टवेयर सामाजिक विज्ञान के क्षेत्र हेतु मौजूद हैं जिससे मैनुअल कामों में कमी आई है और समय की भी बचत होने लगी है। केस स्टडी अथवा जीवन इतिहास जैसे गुणात्मक डेटा के लिए सूचनादाताओं से बातचीत यानी वार्तालाप तथा साक्षात्कार के आधार पर इन्हें लिखा जाता है। गुणात्मक डेटा हेतु हम ज्यादातर समय रिकॉर्ड किए गए वार्तालाप और अवलोकन पर भरोसा करते हैं जिन्हें हम जहां तक संभव होता है सही ढंग से लिखते हैं। किसी भी गुणात्मक डेटा का विश्लेषण और व्याख्या अत्यधिक आवश्यक और सहज है। आमतौर पर अनेक मानवविज्ञानी इन्हें विभिन्न प्रकार से वर्णन करने का प्रयास करते हैं। हालांकि, किसी भी व्यक्ति पर पूर्वाग्रह से बचने के लिए अनुसंधानकर्ता को यह स्पष्ट रूप से बताना चाहिए कि वह उसकी व्याख्या वह उसी प्रकार क्यों कर रहा है।

13.4.2 रिपोर्ट लेखन

एक बार डेटा के संकलन के उपरांत उसकी छंटाई महत्वपूर्ण होती है, जिसे विश्लेषण के उपरांत अनुक्रमिक रूप प्रदान करना जरूरी होता है, जो राइट–अप कहलाता है। आपने 'राइटर्स ब्लॉक' की अवधारणा को जरूर सुना होगा, यह एक ऐसी स्थिति होती है जिसमें एक लेखक यह नहीं समझ पाता कि वह कहां से लिखना शुरू करें और क्या लिखे। लेखन के समय ऐसी समस्या आना आम बात है। अब जब हमने आंकड़ों को एकत्रित कर उनका विश्लेषण भी कर लिया है परंतु हम इस बात के लिए पूरी तरह से आश्वस्त नहीं है कि उन्हें किस प्रकार से प्रस्तुत किया जाए। ऐसी स्थिति में दो प्रकार के लेखन शैली का जिक्र किया जा रहा है जिससे नए लेखकों को सहायता मिलेगी।

मूल रूप से लेखन कार्य दो प्रकार से किया जा सकता है। एक तरीका तो यह है कि हम मुक्त रूप से यानी स्वतंत्र रूप से लिखना चालू करें कि क्षेत्र से एकत्रित तथ्यों को एक अनुक्रम में रखते जाएं जिसे लेख नाम से जाना जाता हैं। इसे शुरू करने के लिए सबसे अच्छा तरीका यह है कि हमने फील्ड में जो कुछ देखा समझा है और जिन घटनाओं से हमारा पाला पड़ा है, उनके बारे में जो हम सोचते हैं या जिसका वर्णन हमने अपनी फील्ड डायरी में किया है उसे उसी रूप में प्रस्तुत कर दें। इसमें कई अनुसंधानकर्ता अपने फील्ड के प्रथम दिन के अनुभव से लेखनकार्य शुरू करते हैं और इसी अनुक्रम को अंत तक बनाए रखते हुए रिपोर्ट को प्रवाह पूर्वक तैयार करते है। दूसरा तरीका यह हो सकता है कि सबसे पहले हम एक रूपरेखा तैयार करें और उसी पैटर्न में लिखना शुरू करें जिससे लेख लेखन के रूप में जाना जाता है। लेख लेखन के लिए कोई किसी भी विधि का प्रयोग करें परंतु उससे एक बात का ध्यान रखना चाहिए कि लेख में सबसे पहले प्रस्तावना, परिचय होना चाहिए उसके बाद प्रयोजन और उद्देश्य के उपरांत फील्ड वर्क तथा तकनीक व प्रविधि यानी पद्धति का होना जरूरी है, तदुपरांत डेटा विश्लेषण होना और अंत में सारांश होना चाहिए।

अपनी प्रगति की जांच करें

9. गुणात्मक और मात्रात्मक डेटा से आपका क्या तात्पर्य है?

.....

.....

.....

10. मानव विज्ञानी फिर से एकत्रित किए गए डेटा के आधार पर उन्हें संकलित करते हैं और उनका विश्लेषण करते हैं तथा रिपोर्ट अथवा थीसिस को तैयार करते हैं। क्या यह कथन सही है या गलत, इसकी चर्चा करें।

.....

.....

.....

13.5 सारांश

आइए अब जल्दी से इस बात को जाने कि हमने इस इकाई में किन बातों को पढ़ा अथवा हम इस इकाई में किन बातों का अध्ययन कर रहे हैं। यह इकाई जो फील्डवर्क से संबंधित है वह हमें यह बताती है कि कोई अनुसंधानकर्ता किस प्रकार फील्ड में जाए। इस इकाई में इस बात का विस्तृत वर्णन किया गया है कि फील्ड में जाने के लिए कौन–कौन सी तैयारियां की जानी चाहिए और उसके विभिन्न चरण कौन–कौन से होते हैं, अनुसंधान डिजाइन किस प्रकार से निर्मित किए जाते हैं, शोध समस्या की पहचान किस प्रकार से की जाती है तथा शोध समस्या तक किस प्रकार पहुंचा जाता है। इस इकाई में साहित्य समीक्षा की प्रासंगिकता का भी उल्लेख किया गया है। इस इकाई में हमने आपको यह बताने की कोशिश की है कि एक अनुसंधानकर्ता के रूप में आप किस प्रकार अपनी योजनाओं को तैयार कर सकते हैं और अपने अनुसंधानकार्य को किस प्रकार पूरा कर सकते हैं। अपनी अगली इकाई में हम इस बात की विस्तृत चर्चा करेंगे की फील्डवर्क के दौरान सामाजिक अथवा सांस्कृतिक मानवविज्ञानियों द्वारा किन तकनीकों और उपकरणों का प्रयोग करके डेटा यानी आंकड़ों को एकत्रित किया जाता है।

13.6. सन्दर्भ

बर्नार्ड, एच. आर. (2006). *रिसर्च मेथड्स इन एन्थ्रोपोलॉजी: क्वालिटेटिव एंड क्वांटिटेटिव एप्रोचेस.* लंहमः अल्टामीरा प्रेस.

चन्ना, एस. एम, (2015). गेटिंग द राइटरश्स क्रंप्स! मेकिंग द ट्रांजिशन फ्रॉम मॉडर्निस्ज्म टू पोस्ट– मॉडर्निस्ज्म इन राइटिंग एन्थ्रोपोलॉजी. वी. के. श्रीवास्तव (सम्पादित). *एक्सपीरियेन्सेस ऑफ फील्डवर्क एंड राइटिंग* (221–237) नई दिल्लीः सीरियल्स पब्लिकेशन.

गुप्ता, ए. एवं फर्गुसन, जे. (संपा). (1997). *एंथ्रोपोलोजिकल लोकेशन्स: बाउंड्रीज एंड ग्राउंड्स ऑफ ए फील्ड साइन्स.* बर्क्लेः यूनिवर्सिटी ऑफ कॅलिफॉर्निया प्रेस.

जॉनसन, जे. एम. (1975). *डूयिंग फील्ड रिसर्च.* न्यूयार्कः फ्री प्रेस.

मालिनोव्स्की, बी. (1922). *अर्गोनोट्स ऑफ द वेस्टर्न पेसिफिकः एन अकाउंट ऑफ नेटिव एंटरप्राइज एंड एड्वेंचर इन द आर्किपेलागोज ऑफ मेलनेसियन न्यू गुयाना.* लंदन: रूटलेज एवं केगेन पॉल.

स्टेनबेक, एस. एवं स्टेनबेक, डब्ल्यू. (1988). *अंडरस्टैंडिंग एंड कंडक्टिंग क्वालिटेटिव रिसर्च.* रेस्टन, वी.ए.: काउन्सिल फॉर एक्सेप्शनल चिल्ड्रेन.

वेक्स, आर. (1971). *डूयिंग फील्डवर्क : वॉर्निंग्स एंड एड्वाइज.* शिकागो: यूनिवर्सिटी ऑफ शिकागो प्रेस.

http://www.merriam-webster.com/dictionary/rapport accessed in 2017.

13.7 आपकी प्रगति जांचने हेतु उत्तर

1. कृपया अधिक जानकारी के लिए अनुभाग 13.0 को देखें
2. कृपया अधिक जानकारी के लिए अनुभाग 13.1 को देखें
3. कृपया अधिक जानकारी के लिए अनुभाग 13.1 को देखें
4. गलत
5. फील्डवर्क
6. कृपया अधिक जानकारी के लिए अनुभाग 13.3.1 को देखें
7. हाँ
8. सही
9. अनुभाग 13.4.1 को देखें
10. सही

इकाई 14 प्रविधि और तकनीक

इकाई की रूपरेखा

14.0 प्रस्तावना

14.1 तथ्य संकलन की विधियां

- 14.1.1 फील्डवर्क
- 14.1.2 सर्वेक्षण
- 14.1.3 दस्तावेज अथवा प्रलेखन
- 14.1.4 प्रायोगिकी

14.2 उपकरण और तकनीक

- 14.2.1 अवलोकन (अवलोकन)
- 14.2.2 साक्षात्कार
- 14.2.3 जीवन इतिहास
- 14.2.4 केस स्टडी
- 14.2.5 वंशावली
- 14.2.6 फोकस समूह चर्चा

14.3 साक्षात्कार अनुसूची और प्रश्नवाली

14.4 सारांश

14.5 संदर्भ

14.6 आपकी प्रगति की जांच करने के लिए उत्तर

अधिगम का उद्देश्य

इस इकाई को पढ़ने के उपरांत विद्यार्थी निम्न बातों की व्याख्या करने में सक्षम होंगेः

- सामाजिक और सांस्कृतिक मानव विज्ञानी द्वारा डेटा संग्रहण के लिए इस्तेमाल की जाने वाली विधियाँ;
- प्रयोग किए जाने वाले उपकरण और तकनीक; और
- साक्षात्कार अनुसूची, साक्षात्कार गाइड और प्रश्नवाली के बीच अंतर

14.0 प्रस्तावना

इससे पूर्व की इकाई में हमने शोध प्रकल्प तैयार करने, शोध विषय का चयन करने, फील्डवर्क करने, फील्ड से तथ्य संकलित करने, डेटा विश्लेषण तथा रिपोर्ट लेखन आदि के बारे में चर्चा

योगदानकर्त्ता : प्रोफेसर, विनय कुमार श्रीवास्तव द्वारा संपादित पूर्व प्रोफेसर एवं अध्यक्ष, मानव विज्ञान विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय. वर्तमान निर्देशक, भारतीय मानवविज्ञान सर्वेक्षण.

डॉ. रूखशाना जमान, मानव विज्ञान संकाय, सामाजिक विज्ञान विद्यापीठ, इग्नू, नई दिल्ली.

की। इस प्रकार संक्षेप में हम यह कह सकते हैं कि पूर्व इकाई में हमने फील्डवर्क करने के विभिन्न चरणों की चर्चा की। मानव विज्ञान के क्षेत्र में लोगों को यह मानना चाहिए कि फील्डवर्क ही एकमात्र विधि नहीं है इसे पूर्ण करने की अन्य विधियाँ भी हैं, जिन्हें अनुसंधानकर्ता इस्तेमाल कर सकता है। इस इकाई में सामाजिक और सांस्कृतिक मानव विज्ञान के क्षेत्र में इस्तेमाल की जाने वाली विभिन्न विधियों के बारे में हम चर्चा करेंगे तथा इस बारे में भी चर्चा करेंगे कि कोई अनुसंधानकर्ता डेटा संग्रहण के लिए किन उपकरणो और तकनीकों का इस्तेमाल करता है ।

14.1 तथ्य संकलन की विधियां

डेटा संग्रहण के चार तरीके हैं। इनमें से प्रत्येक में तकनीकों का एक सेट होता है। इनमें से प्रत्येक तरीके का किसी न किसी शाखा में इस्तेमाल किया जाता है। उदाहरण के लिए इतिहासविद अभिलेखागार, संग्रहालयों और पुस्तकालयों में काम करते हैं और वे वहीं से डेटा(तथ्य) प्राप्त करते हैं। अर्थशास्त्री जनगणना और नमूना सर्वेक्षण से जानकारी प्राप्त करते हैं, जिनमें प्रमुख हैं, नेशनल सैंपल सर्वे, इंडस्ट्रीज का सर्वे इत्यादि। इनमें से प्रत्येक विधि की अपनी वास्तविकता और संबंध की अवधारणा है जो प्रेक्षक और अवलोकन के बीच मौजूद रहती है। यद्यपि इन सभी विधियों को विभिन्न विषयों के अंतर्गत विकसित किया गया है और वे हमेशा जुड़ी रहती हैं। जिसका अर्थ है कि किसी के अवगुणों को दूसरों की खूबियों से दूर किया जा सकता है। डेटा संग्रहण के विभिन्न तरीकों के संयोजन के लिए उपयोग की जाने वाली तकनीकी शब्द का नाम 'ट्राइंगुलेशन' है, जिसकी उत्पत्ति ज्यामिति विज्ञान में हुई। 'ट्राईलुंगेशन' केवल विधि और तकनीक ही नहीं है, यह सैद्धांतिक दृष्टिकोण भी हो सकता है और विभिन्न जांचकर्ताओं से संबंधित भी हो सकता है। यद्यपि शोधकर्ता का उद्देश्य कम समय में पर्याप्त और सही डेटा एकत्रित करना है। प्रत्येक विधि में समय–सीमा संबंधी नियम होते हैं जो कि उचित डेटा संग्रहण के लिए आवश्यक होता है और इसके अनुसार शोधकर्ता को इसी समय–सीमा के अंतर्गत काम करना होता है।

अतः किसी शोधकर्ता को विभिन्न विधियों की जानकारी होनी चाहिए, जो कि सामाजिक विज्ञान के क्षेत्र में उपलब्ध है। वे किस प्रकार शोधकर्ता के लिए सहायक सिद्ध होंगे उसकी भी उसे जानकारी होनी चाहिए। यहाँ यह उल्लेख करना जरूरी है कि आजकल शोधकर्ताओं से यह अपेक्षा की जाती है कि वे डेटा संग्रहण की प्रक्रियाओं का लेखा–जोखा तैयार रखें और विश्लेषण के जिन तरीकों को वे इस्तेमाल करें उसके बारे में वे वर्णन करें। शोधकर्ता से यह अपेक्षा की जाती है कि शोध के दौरान वे किस समय एक विधि से दूसरी विधि को अपनाते है अथवा उनके द्वारा कौन सी अलग–अलग से विधियों का प्रयोग किया गया है,उसका वर्णन करें। तो आइए इन चार प्रमुख विधियों के बारे में हम चर्चा करें।

14.1.1 फील्डवर्क

तथ्य संकलन की पहली विधि को हम फील्डवर्क कहते हैं। फील्डवर्क प्राकृतिक आवास में स्थिति का प्रत्यक्ष अध्ययन है। फील्डवर्क की एक विशिष्ट परिभाषा यह है कि यह एक प्रकार का इन-सीटू अध्ययन है, जिसका अर्थ किसी घटना का उसके स्वाभाविक स्थान पर अध्ययन है। उदाहरण के लिए अब तक का सबसे वृहत फील्ड अध्ययन जो अभी भी चल रहा है, वह तंजानिया के गोम्बे स्ट्रीम नेशनल पार्क में चिंपांजियों के झुंडों का अध्ययन है, जिसकी शुरुआत जॉने गुडॉल ने 1968 में की थी। यह चिंपांजियों के कैद वाली जगह के स्थान पर उनके

प्राकृतिक आवास का अध्ययन है, जैसे कि इस प्रकार का अध्ययन किसी प्राणी उद्यान या प्रयोगशाला में किया गया हो।

सामान्यतः फील्डवर्क बहुत ही गहन होता है, जिसके अंतर्गत फील्डवर्क करने वाले को समुदाय (या उन लोगों के बीच रहना होता है जिनका वह अध्ययन करता है) में ही जाकर लंबे समय तक रहना होता है और वह भी एक वर्ष से कम नहीं। वर्ष बीतने के बाद फील्ड वर्कर वहां के सामाजिक जीवन को जानने में सक्षम हो जाता है। जिसे पूरे वर्ष समाज द्वारा जीया जाता है जिसमें यह माना जाता है कि वर्ष में जो घटनाएँ घटी हैं वे आने वाले वर्ष में भी होंगी, हालांकि यह भी संभव है कि वर्ष में जो घटनाएँ नहीं घटी हैं वे अगले वर्ष घट सकती हैं, जैसे कि किसी की मृत्यु, कोई प्राकृतिक आपदा या कोई मानव निर्मित आपदा, आदि।

कुछ फील्ड वर्करों (खासकर एडवर्ड इवांस–प्रिचर्ड) यह सलाह देते हैं कि किसी समुदाय में पहले–पहल फील्डवर्क दो साल के लिए होना चाहिए और इसमें भी एक वर्ष के क्षेत्रीयकार्य के उपरांत कुछ महीनों का अंतराल होना चाहिए। कुछ महीनों के लिए फील्ड से अलग रहने की अवधि में फील्ड वर्कर को अपने कार्यों पर ध्यान देने का अवसर मिलता है साथ ही उसे अपने सहयोगियों के साथ चर्चा करने का भी अवसर मिलता है, कि उसने फील्ड में नया क्या सीखा है। नई जानकारियों और समझ के साथ कोई शोधकर्ता पुनः अपने अध्ययन वाले फील्ड में चला जाता है। दूसरे वर्ष में अनुसंधानकर्ता, फील्डवर्क के दौरान प्रथम वर्ष में एकत्र की गई जानकारियों को सत्यापित करने में सक्षम हो जाता है और उन नए प्रश्नों के उत्तर भी ढूँढने लगता है जिसे मुख्य रूप से एकत्रित डेटा से उभरकर और दूसरों के साथ चर्चा के कारण सामने आए हैं। प्रथम वर्ष के फील्ड वर्क को दोहराने से न केवल गलतियों में सुधार होगा और नई समझ विकसित होगी अपितु अवधारणा भी मजबूत होगी। दूसरे वर्ष के फील्डवर्क का कार्य 'अनुभवी अन्वेषक' द्वारा किए जाएंगे।

हालांकि बाद में किया गया क्षेत्रीय अध्ययन कम समय अवधि का भी हो सकता है क्योंकि इस दौरान शोधकर्ता फील्डवर्क की कला को सीख लेगा और वह पहले जैसी गलतियों को नहीं दोहराएगा। साथ ही यह भी सलाह दी जाती है कि शोधकर्ता अपना शोध मसौदा पहले पहल तैयार कर ले अर्थात उसे लिख ले। ताकि अनुसंधानकर्ता समय रहते उसे सुधार सकें।

एक वर्ष के फील्डवर्क (अथवा एक से अधिक वर्षों के फील्ड वर्क) से जो अत्यधिक तथ्य हमें प्राप्त होते है उन्हें समाज अध्ययन के विभिन्न पहलुओं के अंतर्गत प्रकाशित किया जा सकता है। यहां अनुसंधानकर्ता ट्राब्रिएंड आईलैंड पर मालिनोव्स्की के कार्य अथवा न्यूर पर इवांस प्रिचर्ड के कार्य को देख सकते हैं। सामान्यतः फील्डवर्क एक प्रकार से एकल कार्य है। कहने का तात्पर्य यह है कि फील्डवर्क के दौरान फील्डवर्कर स्थानीय निवासियों के साथ अकेले ही फील्ड में होता है। जैसा कि एम.एन श्रीनिवास ने इस बात का वर्णन किया है कि फील्ड वर्कर हर समय लोगों के साथ रहना पसंद नहीं करेगा। वह अपने साथ अपने पति–पत्नी अथवा दोस्तों को नहीं ले जा सकता है इसलिए जो सूचना होती है वह "गुप्त समूह" की सूचना होती है।

14.1.2 सर्वेक्षण विधि

सर्वेक्षण विधि के बारे में यह परिभाषित किया गया है कि इसमें जवाब देने वाला समूह से निश्चित समय के दौरान प्रश्नों के उत्तर पूछे जाते हैं। ज्यादातर सर्वेक्षण बहुत कम समय में पूरे कर लिए जाते हैं हालांकि कुछ एक सर्वेक्षण लंबी अवधि के हो सकते हैं। सर्वेक्षण विधि

या तो एक प्रवृत्ति हो सकती है अथवा पैनल अध्ययन। पैनल अध्ययन और प्रवृत्ति अध्ययन (ट्रेंड स्टडी) में भेद किया गया है। यदि एक ही समूह के उत्तर देने वालों से अलग–अलग समयों में साक्षात्कार किया जाता है ताकि यह पता किया जा सके कि क्या उनके विचारों में कोई बदलाव आया है तब इसे पैनल अध्ययन कहा जाता है। जब किसी समय अलग–अलग लोगों से अलग–अलग समय पर यह देखने के लिए साक्षात्कार किया जाता है कि क्या लोगों का मत अथवा विचार में बदलाव हुआ है तब इसे प्रवृत्ति अध्ययन कहा जाता है। सर्वेक्षण का एक प्रमुख उपकरण अथवा उपस्कर प्रश्नावली है जिसमें प्रश्नों का एक सेट होता है जो किसी विशिष्ट अध्ययन विषय से संबंधित होते हैं। जब प्रश्नावली को ई–मेल अथवा डाक के माध्यम से भेजा जाता है तब इसे ई–मेल प्रश्नावली कहा जाता है परंतु जब इसे आमने–सामने बैठाकर साक्षात्कार की स्थिति में भरा जाता है तब इसे साक्षात्कार अनुसूची कहा जाता है। हम ज्यादातर मामलों में बाद वाले प्रश्नावली को ही चुनते हैं क्योंकि ई–मेल द्वारा भेजी जाने वाली प्रश्नावली का जवाब दर बहुत ही कम होता है और बहुत सारे प्रश्न अनुत्तरित ही रह सकते हैं।

14.1.3 दस्तावेज अथवा प्रलेखन

आलेखों अथवा दस्तावेजों का अध्ययन, तथ्य संकलन की तीसरी विधि है। यह उपलब्ध दस्तावेजों का अध्ययन है। दस्तावेज ना केवल लिखित पांडुलिपि अथवा कथन ही हो सकते हैं। अपितु, दस्तावेज पुरातत्व उपकरण आधार (कलाकृतियां) या शिलालेख (जो कि मंदिरों में पाए जा सकते हैं) या कोई चित्र या कोई अन्य प्रमाण भी हो सकते हैं। दस्तावेज पहले से मौजूद होते हैं और इसलिए वे द्वितीय प्रकार के आंकड़ों को गठित करते हैं। अनुसंधान, दस्तावेजों के विश्लेषण पर केंद्रित होते हैं। दस्तावेज (आलेख) विभिन्न प्रकार के हो सकते हैं– कार्यालय दस्तावेज भी हो सकते हैं जो संस्थानों के रिकॉर्ड में पाए जा सकते हैं। भारत में ब्रिटिश ाासन की सबसे बड़ी उपलब्धि रिकॉर्ड रूम की स्थापना थी, जिसमें पिछली प्रथाओं से संबंधित रिकार्डों को रखा जा सकता है और उनसे संबंधित अध्ययन किए जा सकते हैं। इन दस्तावेजों को आमतौर पर "आधिकारिक दस्तावेज "कहा जाता है। इसके अतिरिक्त निजी दस्तावेज भी होते हैं। निजी दस्तावेज लोगों के पास होते हैं जिसमें उनकी डायरी, उनके बही–खाता और विभिन्न घटनाओं से संबंधित उनके द्वारा लिए गए विवरण हो सकते हैं। शोधकर्ता इन दोनों प्रकार के दस्तावेजों को अपने अनुसंधान संबंधी विश्लेषण के लिए एकत्रित करते हैं। यही नहीं शोधकर्ता के अनुसार भी दस्तावेज तैयार किए जाते हैं जैसे कि वह अपने सवालों के उत्तर देने वाले लोगों से अनुसंधान उद्देश्यों को पूरा करने के लिए यह कहे कि वे लोग अपने जीवन के बारे में कुछ लिखें अथवा उनके जीवन से संबंधित पहलुओं की कुछ बातें बताएं तो वह भी एक प्रकार का दस्तावेज कहलाएगा।

14.1.4 प्रयोगिक विधि

प्राकृतिक तथा जैविक विज्ञान के क्षेत्र में प्रयोगिक विधि तथ्य संग्रहण का यह मुख्य तरीका है। सामाजिक विज्ञान के क्षेत्र में इस विधि का इस्तेमाल मनोविज्ञान में किया जाता है। कुछ समाजशास्त्री जो छोटे–छोटे समूहों पर काम करते हैं वह प्रयोग भी करते हैं। यहां प्रयोग का अर्थ नियंत्रित स्थिति में प्रयोगशाला में, परिकल्पना के परीक्षण अथवा जांच से है, जहां पर बाहरी चर स्थिति को दिग्भ्रमित नहीं करते हैं। एक आदर्श प्रयोगात्मक डिजाइन दो अलग–अलग समूहों में प्रयोग से संबंधित विषयों के विभाजन को निर्धारित करता है–जो प्रयोगात्मक और नियंत्रित समूह हो सकते हैं। प्रयोगात्मक समूह ,स्वतंत्र चारों से लाभ प्राप्त

कर सकता है जिसके लिए नियंत्रित समूह वंचित होते हैं। तदुपरांत इन दोनों समूहों पर होने वाले प्रभावों की तुलना की जाती है। इस प्रकार प्रायोगिक डिजाइन सामाजिक विज्ञान के क्षेत्र में संभव नहीं है क्योंकि बाहरी चर को मुख्यतः नियंत्रित नहीं किया जा सकता। इसके कुछ नैतिक परिणाम भी होते हैं। इस तरह शास्त्रीय प्रयोगात्मक डिजाइन से विचलन होता है जिसके लिए 'अर्ध प्रयोगात्मक' शब्द का इस्तेमाल किया जाता है।

फील्डवर्क और जांच की दूसरी विधियों का इस्तेमाल करके मानवविज्ञानियों ने जिन समुदायों का अध्ययन किया है उन समुदायों का मानववैज्ञानिक लेखा तैयार करते हैं । यह मानव विज्ञान के शोधार्थियों व मानव वैज्ञानिकों हेतु मुख्य होता है जिसे दूसरे विषयों के विद्वान भी रुचि पूर्वक पढ़ते हैं और लाभान्वित भी होते हैं। अगले अनुभाग में हम इस बात की चर्चा करें कि मानव विज्ञानियों द्वारा डेटा संग्रहण हेतु किन अलग–अलग उपकरणों और तकनीकों का प्रयोग किया जाता है।

अपनी प्रगति की जांच करें

1. तथ्य संकलन की चार विधियों का नाम बताएं।

   .....

   .....

   .....

2. प्रवृत्ति अध्ययन और पैनल अध्ययन में क्या अंतर है।

   .....

   .....

   .....

3. उन कुछ आलेखों का नाम बताएं जिन्हें अध्ययन के लिए दस्तावेज के रूप में इस्तेमाल किया जा सकता है।

   .....

   .....

   .....

4. प्रयोग किसी नियंत्रित स्थिति में परिकल्पना का परीक्षण है। यह बताएं कि उक्त कथन सही है अथवा गलत।

   .....

   .....

   .....

14.2 उपकरण और तकनीक

आइए, चाय बनाने के उदाहरण के साथ इस अनुभाग को शुरू करते हैं कि उपकरण और तकनीक से क्या तात्पर्य है। एक कप चाय बनाने के लिए हमें सबसे पहले यह निश्चित करना

होगा कि हम किस प्रकार की चाय बनाना चाहते हैं। क्योंकि, बहुत प्रकार से चाय बनती है और चाय बहुत प्रकार की होती है जैसे कि ग्रीन टी, ब्लैक टी, दूध और चीनी वाली चाय अथवा हमारी पसंदीदा मसाला चाय। प्रत्येक चाय बनाने की अलग विधि होती है और तदनुसार उसके लिए इस्तेमाल होने वाले बर्तन भी भिन्न होते हैं, कि चाय किस प्रकार तैयार होगी। अगर हमें ग्रीन टी बनानी हो तो हमें ग्रीन टी की पत्तियों, स्ट्रेनर और बर्तन की जरूरत होगी और वह बर्तन कोई पैन या कुकवेयर हो सकता है जिसका इस्तेमाल चाय बनाने के लिए हॉट प्लेट, गैस अथवा माइक्रोवेव पर किया जा सकता है। साथ ही एक मग और चाय के कप की जरूरत भी होगी जिसमें हम चाय को छान सकते हैं। जब हम किसी तकनीक का उपयोग करके पानी को उबाल लेते हैं (गैस स्टोव अथवा हॉट प्लेट, या इलेक्ट्रिक केतली में अथवा किसी पैन में पानी को उबाल लेते हैं या माइक्रोवेव में पानी को गर्म कर लेते हैं) तब हम उस गर्म पानी को कप या मग में डाल सकते हैं और उसमें ग्रीन टी की पत्तियों को कुछ मिनट के लिए छोड़ सकते हैं और तदुपरान्त हमारी ग्रीन टी बनकर तैयार हो जाएगी। इस प्रकार हम देखते हैं कि विभिन्न तकनीकों जिसे हम चाहे उसका इस्तेमाल करके ग्रीन–टी को बनाया जा सकता है। इसी प्रकार फील्ड में शोधकर्ता को पहले शोध विषय के बारे में निश्चित करना होता है और विषय के आधार पर उससे संबंधित उपकरण और तकनीकों का उसे चयन करना होता है। आमतौर पर तथ्य संकलन के लिए जो मुख्य उपकरण होते हैं वे हैं; (क) अवलोकन (ख) साक्षात्कार (ग) जीवन इतिहास (घ) केस स्टडी और (च) फोकस समूह चर्चा, जिनके अंतर्गत हम विभिन्न तकनीकों का उपयोग कर सकते हैं जैसे कि अवलोकन तकनीक में प्रतिभागी अवलोकन अथवा गैर–प्रतिभागी अवलोकन, साक्षात्कार के लिए प्रत्यक्ष साक्षात्कार या अप्रत्यक्ष साक्षात्कार।

14.2.1 अवलोकन (प्रेषण)

अवलोकन अथवा प्रेषण किसी विशेष घटना या बात अथवा यहां तक कि दो या दो से अधिक लोगों के बीच के पारस्परिक संबंधों और अंतर–वैयक्तिक संबंधों की जांच के रूप में परिभाषित किया जा सकता है। हालांकि, इस जांच के लिए यह जरूरी है कि, वह वैज्ञानिक जांच का हिस्सा होने के चलते व्यवस्थित हो और घटना से संबंधित हो। उदाहरण के लिए, यदि आप किसी समुदाय में जाते हैं और वहाँ के गाँव में स्थित किसी पेड़ का निरीक्षण करते हैं तब उस पेड़ के बारे में वर्णन मात्र गाँव में उसकी अवस्थिति तक ही सीमित नहीं होगी अपितु शोधकर्ता हेतु यह जरूरी होगा कि वह उस पेड़ से जुड़े समुदाय की गतिविधियों से जोड़कर देखे और ऐसी स्थिति में यदि पेड़ का अवलोकन किया जाता है अथवा उसके बारे में कोई रिपोर्ट लिखी या रिकॉर्ड की जाती है तब वह पेड़ वैज्ञानिक जांच का हिस्सा हो जाएगा। अवलोकन को दो भागों में विभाजित किया गया है– (क) प्रतिभागी अवलोकन, (ख) गैर–प्रतिभागी अवलोकन, और (ग) अर्ध–प्रतिभागी अवलोकन। यही नहीं, कुछ विद्वान इसे प्रत्यक्ष प्रतिभागिता और अप्रत्यक्ष प्रतिभागिता के रूप में भी जिक्र करते हैं ।

प्रतिभागी अवलोकनः प्रतिभागी अवलोकन को शुरू करने का श्रेय मालिनोवस्की को जाता है, जिन्होने पापुआ न्यू गिनी के ट्रोब्रिएंड आइलैंडर्स पर आधारित अध्ययन ने मानव विज्ञान के क्षेत्र में फील्डवर्क के लिए मानदंड निर्धारित किए। इस संबंध में मालिनोवस्की ने वर्णन किया कि फील्डवर्क हेतु समुदाय की रोजमर्रा की गतिविधियों में भाग लेना होगा, 'अनुसंधानकर्ता को जहां तक संभव हो व्हॉइट लोगों की संगत से खुद को दूर रखना होगा और यह तभी संभव है जब हम गाँव में शिविर बनाकर रहें"। (मालिनोवस्की, 1922: 6) अवलोकन करने के लिए यह शास्त्रीय तरीकों में से एक तरीका था ताकि अध्ययन के दौरान हम लोगों से जुड़

सकें। शोधकर्ता के लिए भी यह जरूरी होता है कि वह स्थानीय लोगो जैसा ही जीवनयापन करें। हालांकि, इक्कीसवीं सदी में जब फील्ड की परिभाषा में बदलाव हो गया है और फील्ड शोधकर्ता की अपनी भूमि से दूर कोई 'बाहय स्थान' न होकर उसकी अपनी भूमि हो चुकी है ऐसी स्थिति में समुदाय में शिविर लगाना संभव नहीं है। क्योंकि, यदि अध्ययन क्षेत्र कोई संस्था जैसे कि स्कूल, गैर–सरकारी संगठन, कॉरपोरेट स्थल आदि हो तो शिविर लगाना संभव नहीं है। इसके अतिरिक्त मानवविज्ञानी को अपने स्वयं के समुदाय से भी दूर नहीं होना चाहिए क्योंकि शोधकर्ता आजकल अपने समुदायों के बीच रहकर ही कार्य कर रहे हैं ताकि वे समुदाय की अंदरूनी बातों को जान सके। अध्ययन के अंतर्गत समुदाय की गतिविधियों में भाग लेने वाले शोधकर्ता के लिए प्रतिभागी अवलोकन अहमियत रखता है क्योंकि शोधकर्ता यहाँ पर प्रत्यक्ष रूप से समुदाय से या समुदाय की गतिविधियों से जुड़ता है ।

गैर–प्रतिभागी अवलोकनः गैर–प्रतिभागी अवलोकन में शोधकर्ता समुदाय की गतिविधियों में प्रत्यक्ष रूप से शामिल हुए बिना उसका दूर से अध्ययन करता है। यहां पर शोधकर्ता लोगों के जीवन और उनके अनुभवों से अध्ययन के अंतर्गत अपेक्षाकृत दूर होता है। ऐसी स्थिति में शोधकर्ता समुदाय की गतिविधियों का अवलोकन एक बाहरी व्यक्ति के रूप में करता है और वह गतिविधियों को वस्तुनिष्ठ तरीके से देखता है, जबकि यदि प्रेक्षक शारीरिक और भावनात्मक रूप से इसमे शामिल होता है तब अवलोकन व्यक्तिपरक हो जाता है, जहां प्रेक्षक न केवल अवलोकन के आधार पर बल्कि अपने व्यक्तिगत अनुभवों के आधार पर डेटा को रिकॉर्ड करता है।

अर्ध–प्रतिभागी अवलोकनः अधिकांश मामलों में फील्ड में शोधकर्ताओं द्वारा किए गए अवलोकन को अर्ध–प्रतिभागी अवलोकन के रूप में जाना जाता है क्योंकि बहुत से मामलों में पूर्ण प्रतिभागिता संभव नहीं होती है। कई बार शोधकर्ता के लिए यह संभव नहीं होता है कि वह फील्ड की स्थिति से प्रत्यक्ष रूप से जुड़े। उदाहरण के लिए, किसी समुदाय में लड़के या लड़कियों के *राईट्स डी पैसेज* (दीक्षा संस्कार आदि) का अध्ययन करने के लिए किसी शोधकर्ता को गहन रूप से दीक्षा संस्कार का निरीक्षण करना होगा, हालांकि शोधकर्ता व्यक्तिगत रूप से दीक्षा संस्कार आदि में भाग नहीं ले सकता। अतः भले ही यहाँ प्रतिभागिता है परंतु यह अपने आप में पूर्ण नहीं है इसलिए यह अर्ध–प्रतिभागी अवलोकन होगा।

14.2.2 साक्षात्कार

गुडे एवं हट (1981) का यह कहना है कि 'साक्षात्कार मूल रूप से सामाजिक संपर्क की प्रक्रिया है'। फील्ड में केवल अवलोकन ही पर्याप्त नहीं होता है। अवलोकन को घटनाओं, स्थितियों और गतिविधियों से संबंधित प्रश्नों से जोड़ा जाना चाहिए। साक्षात्कार करने की कई विधियाँ हैं, क्योंकि साक्षात्कार कई प्रकार के होते हैं। साक्षात्कार के मूलभूत तकनीक हैंः (क) प्रत्यक्ष साक्षात्कारय और (ख) अप्रत्यक्ष साक्षात्कार। प्रत्यक्ष साक्षात्कार में शोधकर्ता सूचना प्रदाताओं से मिलता है और आमने–सामने बैठकर उनका साक्षात्कार करता है। जबकि अप्रत्यक्ष साक्षात्कार में शोधकर्ता या तो अपने प्रश्नों को सूचना देने वालों तक ई–मेल के माध्यम से अथवा डाक के माध्यम से या विडियो कॉन्फ्रेंसिंग के माध्यम से भेज सकता है अथवा वेब/दूरभाष के माध्यम से साक्षात्कार ले सकता है। प्रत्यक्ष साक्षात्कार औपचारिक अथवा अनौपचारिक हो सकता है। औपचारिक साक्षात्कार में शोधकर्ता को कुछ प्रोटोकॉल का पालन करना होता है, जिसमें साक्षात्कार किए जाने वाले व्यक्ति से साक्षात्कार का समय लेना, सूचना देने वालों की सहमति लेना तथा साक्षात्कार का समय और स्थान को निश्चित करना। कई

मामलों में साक्षात्कार की अवधि पूर्व–निर्धारित होती है। इस प्रकार के साक्षात्कार में प्रमुख हितधारक जैसे कि सरकारी अधिकारी अथवा क्षेत्र से संबधित प्रसिद्ध व्यक्ति शामिल होते हैं जिन लोगों के लिए समय का बहुत महत्व होता है। हालांकि, किसी गांव में फील्ड यानि अध्ययन क्षेत्र के स्थित होने के कारण ज्यादातर साक्षात्कार अनौपचारिक होते हैं। जब कोई शोधकर्ता लोगों के साथ रहता है तब वह साक्षात्कार समुदाय के लोगों के साथ रहते हुए कर सकता है, और वह भी उनके कुछ सामुदायिक कार्यों में हाथ बंटा सकता है अथवा गांव के किसी टी स्टाल अथवा किसी के घर पर चाय भी पी सकता है जिसे अनेक मानव विज्ञानियों द्वारा 'गहन पैठ करना' (डीप हेंगिंग आउट) कहा जाता है। (फोनटिन 2014: 77) जब शोधकर्ता फील्ड में फील्डवर्क हेतु मौजूद रहता है तब प्रत्यक्ष साक्षात्कार एक आदर्श होता है जो कि औपचारिक या अनौपचारिक हो सकता है। साक्षात्कार करने के लिए प्रतिभागियों की सहमति इसके लिए जरूरी होती है जोकि मौखिक या गैर–मौखिक हो सकता है।

अप्रत्यक्ष साक्षात्कार के मुकाबले प्रत्यक्ष साक्षात्कार के फायदे अधिक होते हैं क्योंकि साक्षात्कार में यह बात अहम नहीं होती है कि क्या कहा गया है अपितु यह बात समान रूप से अहम होती है कि वह बात किस प्रकार से कही गई है। साथ ही आंकड़ों का महत्वपूर्ण पहलू भी इसमें अहम होता है। लोग, कोई बता सकते हैं अथवा उसी बात को एक भिन्न तरीके से कह सकते हैं जिसका तात्पर्य उच्चरित शब्द से भिन्न हो सकता है। प्रत्यक्ष साक्षात्कार में न कि केवल बातों को ही रिकार्ड किया जाता है बल्कि चेहरे के हाव–भाव को भी रिकॉर्ड किया जाता है इसलिए मानव विज्ञानियों हेतु औपचारिक संरचित और प्रतिबंधित साक्षात्कार की तुलना में प्रत्यक्ष साक्षात्कार और असंरचित साक्षात्कार पसंदीदा तकनीक हैं। असंरचित साक्षात्कार में सूचनाओं और विचारों का निर्बाध प्रवाह होता है जिससे आंकड़े अत्यधिक मात्र में प्राप्त होते हैं जोकि साक्षात्कार के संरचित प्रारूपों में संभव नहीं है।

14.2.3 जीवन इतिहास

मानवविज्ञानियों द्वारा जीवन इतिहास का उपयोग किसी व्यक्ति के व्यापक जीवन विवरण को दर्शाने के लिए किया जाता है। यह इतिहास दोनों प्रकार का हो सकता है, चाहे वह व्यक्ति द्वारा लिखा गया इतिहास हो अथवा किसी दूसरे व्यक्ति द्वारा सुनाया गया इतिहास हो। (लैंगनेस 1965) जीवन इतिहास व्यक्ति के अद्वितीय विशेषताओं को दर्शाता है जो उन्हें समूह में दूसरे लोगों से अलग करता है। (यंग 1996:26) जीवन इतिहास कई बार किसी समूह की विशेषताओं और जीवन पद्धति को भी प्रस्तुत करता है। जिस व्यक्ति के जीवन इतिहास का अध्ययन किया जाना है उसके चयन का मानदंड समुदाय के सदस्य के रूप में उस व्यक्ति के योगदान पर निर्भर करता है। इसके लिए जरूरी नहीं है कि वह एक प्रतिष्ठित व्यक्ति हो। वह एक सामान्य व्यक्ति भी हो सकता है जिसे आपने प्रमुख सूचना देने वाले के रूप में चुनते हैं और जिसे आपके अध्ययन विषय से संबंधित ज्ञान हो।

प्रतिबिंब

मुख्य सूचनादाता: प्रमुख सूचनादाता कोई भी पुरुष या स्त्री हो सकता है जिसे आपके अध्ययन विषय की जानकारी हो। जो संबंधित विषय से जुड़ी अंदरूनी बातें भी आपको बता सके। सूचना देने वाले प्रमुख व्यक्ति का चयन सामान्यतः शोधकर्ता द्वारा प्रतिष्ठा स्थापन (रेपो निर्माण) के समय ही किया जाता है। जब शोधकर्ता फील्ड में जाकर समुदाय के बारे में जानने समझने की कोशिश करता है उसी समय वह अपने सूचनादाता और वातावरण के साथ सामंजस्य स्थापित कर लेता है।

जीवन इतिहास ,गहन अध्ययन की अनुमति प्रदान करता है। जीवन–इतिहास को एकत्रित करने के पीछे तर्क यह है कि लोग निर्वात (वेक्यूम) में नहीं रहते हैं। लोग समाज में ही रहते हैं और समाज के अनुसार वे इसके मानदंडों और मूल्यों द्वारा निर्देशित होते हैं। इतिहासकार और जीवनीकार जो अद्वितीय अथवा शक्तिशाली व्यक्तियों के इतिहास की तलाश में रहते हैं उसके विपरीत मानवविज्ञानी सामान्य जीवन से सामान्य व्यक्तियों के जीवन इतिहास को एकत्रित करते हैंय ताकि वे अपने अध्ययन की अवधि में आम संस्कृति और जीवन के तरीके के बारे में जान सकें। जीवन इतिहास अक्सर व्यक्ति के जीवन पर सामाजिक और सांस्कृतिक घटनाओं तथा संक्रमण के प्रभाव व बदलाव को दर्शाता है। मानव विज्ञान के क्षेत्र में सबसे प्रसिद्ध जीवन इतिहास पेड्रो मार्टिनेज का है जिसे ऑस्कर लुईस द्वारा लिखा गया है जिन्होंने एक साधारण मैक्सिकन व्यक्ति और उसके परिवार के जीवन के बारे में बहुत विस्तार से वर्णन किया है।

व्यक्तिगत जीवन इतिहास की विधि अमेरिकी सांस्कृतिक मानवविज्ञान में विकसित हुई, क्योंकि यहाँ लुप्त हो रही जनजातियों की संकटपूर्ण स्थिति मौजूद थी। आमतौर पर वे किसी जनजाति के मात्र एक अथवा बहुत कम सदस्यों की जानकारी प्राप्त कर सकते थे। इस प्रकार की स्थिति में किसी एक व्यक्ति के विस्तृत जीवन इतिहास को एकत्रित करना ही एकमात्र तरीका था जिसमें इस लुप्त हो चुकी अथवा हो रही जनजाति के बारे में कुछ जाना जा सके।

14.2.4 केस स्टडी

हर्बर्ट स्पेन्सर पहले समाजशास्त्री थे जिन्होंने अपने मानवविज्ञान संबंधी अध्ययन में केस स्टडी (वैयक्तिक अध्ययन) का उपयोग किया। केस स्टडी (वैयक्तिक अध्ययन) में किसी विशेष घटना, बात या मुद्दे का गहन अनुसंधान शामिल होता है जिसमें किसी समुदाय अथवा लोगों का समूह प्रत्यक्ष रूप से शामिल होता है या उससे प्रभावित होता है। यहाँ हम भोपाल गैस त्रासदी जो 3 दिसंबर 1984 को भोपाल में हुई उसका उदाहरण ले सकते हैं। शारीरिक अथवा जैविक मुद्दों, मनोवैज्ञानिक मुद्दों या औषधीय–कानूनी मुद्दों आदि के संदर्भ में कोई शोधकर्ता त्रासदी से जुड़े प्रभाव का अध्ययन कर सकता है। इस प्रकार के अध्ययन में समूह की एकरूपता का वर्णन त्रासदी के साथ इसके संबंध के संदर्भ में किया जा सकता है कि व्यक्ति कैसे त्रासदी से संबंधित होता है। मानव मस्तिष्क घटनाओं और घटित बातों को याद करने का एक ढंग है जो इसके लिए प्रासंगिक हैं। अतः अलग–अलग लोगों की केस स्टडी प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से उस घटना से संबधित होती है। परंतु जब केस स्टडी किया जाता है तो वह विभिन्न दृष्टिकोणों या घटनाओं की यादों और समझ के अनुसार ही उसे संदर्भ में जानकारी प्रदान कर सकता है।

केस स्टडी एक प्रकार से समग्र पद्धति है जो हमें किसी घटना या इवेंट से संबंधित सर्वांगीण परिप्रेक्ष्य को अर्जित करने के योग्य बनाती है । कुछ मानवविज्ञानी जैसे कि मैक्स ग्लकमैन और वैन वेलसन ने भी एक पद्धति को विकसित किया जिसे विस्तारित केस स्टडी के रूप में जाना जाता था। इस पद्धति का उपयोग संघर्षों और विवादों और मामलों के विश्लेषण के लिए आमतौर पर प्रयोग किया जाता था। मूल रूप से लंबे समय तक किसी केस या घटना के बाद तक इसे जारी रखा जाता था, जिससे किसी को न केवल संरचनाओं और मानदंडों में एक अंतर्दृष्टि प्राप्त हो सके, अपितु जीवन की सामाजिक प्रक्रियाओं के बारे में भी जानकारी मिल सके ।

14.2.5 वंशावली

अब तक आप वंशावली से परिचित हो चुके होंगे, वंशावली किस प्रकार बनती है इसके बारे में हमने इकाई 6 : 'संस्थानः रिश्तेदारी परिवार और विवाह' में चर्चा की है। वंश की रेखा को जानने में वंशावली सहायता करती है। यह मानवशास्त्रीय फील्डवर्क का एक अभिन्न अंग है क्योंकि, इससे अतीत और वर्तमान को जोड़ कर देखा जा सकता है। वंशावली अध्ययनों ने पूर्वजों और पूर्वजों की पूजा–अर्चना से जुड़े मिथकों और मान्यताओं का पर्दाफाश किया है। उदाहरण के लिए, कार्बी गांव में वंशावली अध्ययन के दौरान यह पाया गया कि परिवार के कई लोगों के नाम एक समान हैं। वंशावली से पता चलता है कि किसी परिवार में नवजात शिशु का नाम केवल उनके पूर्वजों के नाम पर रखा जा सकता है जिसके लिए चोमनगकान (पूर्वजों की पूजा से संबंधित अनुष्ठान) सम्मिलित किया गया था। चूंकि, चोमनगकान समारोह के लिए अत्यधिक धन और वित्त की जरूरत होती है इसलिए कारबियों ने इस अनुष्ठान को करना लगभग बंद कर दिया है, गाँव में अंतिम चोमनगकान का अध्ययन बीस साल पहले नब्बे के दशक के आखिरी दिनों में हुआ था।

14.2.6 केंद्रीय (फोकस) समूह चर्चा

अब तक हमने शोधकर्ता द्वारा समुदाय में व्यक्तियों के साथ प्रत्यक्ष या आमने–सामने साक्षात्कार के माध्यम से एक दूसरे से बातचीत के बारे में चर्चा की है। समुदाय हितों के संदर्भ में हम केंद्रीय समूह चर्चा द्वारा भी शोध अध्ययन में योगदान कर सकते हैं जिसके अंतर्गत लोगों के समूह साक्षात्कार लिए जाते हैं। एक ही समय में शोधकर्ता एक ही विषय पर एक से अधिक व्यक्ति या कई लोगों की राय लेने के लिए बातचीत कर सकता है जो अनुसंधान के लिए फायदेमंद साबित हो सकता है। ऐसी स्थिति में फोकस समूह चर्चा की जाती हैं। किसी फोकस समूह चर्चा के दौरान समूह में 8–10 लोग शामिल होते हैं। इसके लिए छोटे समूह प्रबंधनीय होते हैं और इसके द्वारा मध्यस्थ बातचीत जारी रख सकते हैं। यदि समूह बड़ा होता है तो बात करने में असहजता महसूस हो सकती है, जबकि छोटे समूह में वार्तालाप का प्रवाह हावी हो सकता है। किसी केंद्रीय समूह चर्चा में सामान्य रूप से विषम समूह या विभिन्न हितधारकों का चयन किया जाता है ताकि एक ही विषय पर उनके विचार और उनकी राय को समझा जा सके। फोकस समूह चर्चा करने के दौरान शोधकर्ता इसमें भाग नहीं लेता है अपितु वह पूरे सत्र को रिकॉर्ड करता है और उसका अवलोकन करता है।

यह तकनीक, लक्ष्य–उन्मुख और क्रियात्मक–अनुसंधान के लिए अधिक उपयुक्त है, जैसे कि किसी गांव में पोलियो टीकाकरण की शुरूआत या नए कल्याणकारी योजना की शुरूआत करने के लिए लोगों के नजरिए का आकलन करने के उद्देश्य से इस पहलू पर ध्यान केंद्रित किया जाता है। इसका प्रयोग शायद ही कभी मात्रात्मक अनुसंधान के लिए किया जाता हो।

अपनी प्रगति की जांच करें

5. प्रतिभागी अवलोकन किस मानवविज्ञानी की रचना से जुड़ा हुआ है?

.....

.....

.....

6. मानव विज्ञानियों द्वारा इस्तेमाल किए जाने वाले विभिन्न प्रकार के अवलोकन तकनीकों को बताएं ।

.....

.....

.....

7. 'साक्षात्कार बातचीत करने की एक प्रक्रिया है।' यह बताएं कि यह कथन सही है या गलत।

.....

.....

.....

8. 'मानव विज्ञान में जीवन इतिहास के अंतर्गत केवल प्रमुख हस्तियों को शामिल किया जाता है'। यह बताएं कि यह कथन सही है या गलत ।

.....

.....

.....

.....

9. किस समाजशास्त्री ने सबसे पहले अपने फील्डवर्क में केस स्टडी विधि का इस्तेमाल किया?

.....

.....

.....

.....

10. 'फोकस समूह चर्चा में हमें बहुत से लोगों के बड़े समूह की जरूरत होती है।' यह बताएं कि यह कथन सही है या गलत।

.....

.....

.....

14.3 साक्षात्कार अनुसूची और प्रश्नावली

साक्षात्कार लेने के लिए हमें व्यवस्थित दृष्टिकोण को अपनाना होता है। इसके लिए प्रश्न पहले से तैयार कर लिए जाते है ताकि अनुसंधानकर्ता, साक्षात्कार लेने के दौरान सूचनादाता से तर्क–संगत सूचनाओं को प्राप्त कर सके। अनुसंधान कार्य की आवश्यकता के अनुसार विभिन्न प्रकार के साक्षात्कार–अनुसूची और नियम बना लिए जाते हैं। जिसका प्रयोग प्रत्यक्ष

साक्षात्कार के लिए अनुसंधानकर्ता द्वारा या तो संरचनात्मक साक्षात्कार–अनुसूची अथवा गैर–संरचनात्मक साक्षात्कार अनुसूची तैयार करने में करता है।

साक्षात्कार अनुसूची : साक्षात्कार अनुसूची, साक्षात्कार के दौरान शोधकर्ता द्वारा इस्तेमाल किया जाने वाला एक प्रारूप होता है। संरचनात्मक साक्षात्कार अनुसूची में निश्चित प्रश्नों के प्रारूप होते हैं जिसका प्रयोग अनुसंधानकर्ता साक्षात्कार के दौरान करता है। मुख्यरूप साक्षात्कार अनुसूची का प्रयोग सर्वेक्षण विधि अथवा मात्रात्मक डेटा के संग्रहण हेतु प्रयोग किया जाता है। जनगणना आंकड़ों को सामान्य तौर पर संरचित साक्षात्कार अनुसूची द्वारा एकत्र किया जाता है। ज्यादातर मामलों में इस प्रकार के मात्रात्मक आंकड़ों को संकलित, सारणीबद्ध और विश्लेषित करने की जरूरत होती है।

साक्षात्कार निर्देशिका : गैर–संरचनात्मक साक्षात्कार निर्देशिका का इस्तेमाल साक्षात्कार लेने के लिए उन स्थितियों में किया जाता है जिनमें निश्चित प्रारूपों का इस्तेमाल नहीं होता है। अर्थात, इसे मुख्य रूप से गुणात्मक डेटा के लिए संग्रहण के लिए किया जाता है। साक्षात्कार निर्देशिका, विषय के संबंध में कुछ मूलभूत प्रश्नों की प्रासंगिकता हेतु संरचना प्रदान करने में सहायता करती है, यह उन तथ्यों के बारे में शोधकर्ता को विषयकेंद्रित रखती है जिनके बारे में किसी साक्षात्कार के दौरान पूछताछ की जानी चाहिए। जिसे किसी निर्धारित ढांचे से प्राप्त नहीं किया जा सकता हैं। ये सभी प्रश्न वार्तालाप के प्रवाह को कायम रखने में सहायता करते हैं। विषयांतर अथवा भटकने की स्थिति में साक्षात्कारकर्ता और सूचनादाता को उस विषय पर पुनः बातचीत करने के लिए निर्देशित करते हैं। किसी साक्षात्कार निर्देशिका का इस्तेमाल करके कोई साक्षात्कार उन्मुक्त ढंग से हो सकता है जैसा कि जीवन इतिहास या केस स्टडी संबंधी जानकारी को एकत्रित करने के लिए किया जाता है।

प्रश्नावलीः इस उपकरण का प्रयोग ऐसी स्थिति में किया जाता है जहां शोधकर्ता शारीरिक रूप से उपस्थित न हो सके। इस प्रकार के क्षेत्र में साक्षात्कार हेतु शोधकर्ता प्रश्नावली सूचनादाता तक भेजता है जहां, सूचनादाता इस प्रश्नावली के उत्तरों को भरकर देते हैं। प्रश्नावली का उपयोग वर्चुअल स्पेस में भी किया जा सकता है जैसे कि सर्वेक्षण प्रारूप तैयार करके सोशल नेटवर्किंग के माध्यम से वेबसाइटों पर ऑनलाइन भेजा जा सकता है जिसे उत्तर देने वाले उसका प्रिंटआउट लिए बिना ऑनलाइन ही उसे भर सकते हैं। साक्षात्कार अनुसूची और प्रश्नावली में मूल अंतर यह है कि साक्षात्कार अनुसूची, साक्षात्कार लेने वाले द्वारा खुद ही क्षेत्र में भरी जाती है, और शोधकर्ता शीट में जानकारी भरता है, जबकि प्रश्नावली के लिए शोधकर्ता को जवाब देने वालों के समक्ष उपस्थित होकर जवाब भरने कि जरूरत नहीं होती। किसी प्रश्नावली के लिए प्रश्नों का क्रम बहुत महत्वपूर्ण होता है। इसके लिए सरल और स्पष्ट प्रश्नों के साथ प्रश्नावली को शुरू कर सकते है जिसे आसानी से हल किया जा सकता है। तदुपरान्त कठिन और चिंतनशील प्रश्नों के उत्तर पूछे जा सकते हैं। यही नहीं प्रश्नावली के अंतर्गत कोई शोधकर्ता बहुविकल्पीय प्रश्नों को भी पूछ सकता है जिसका उत्तर देने के लिए कई विकल्पों में से एक को चुनना होता है। इसके अतिरिक्त कोई शोधकर्ता टेस्ट प्रश्नों को भी पूछ सकता है। कुछ महत्वपूर्ण प्रश्नों के उत्तरों की विश्वसनीयता को जानने के लिए अनेक प्रश्नों की रूपरेखा बनानी पड़ सकती है। किसी प्रश्नावली को भरने के लिए समूह का पर्याप्त साक्षर होना जरूरी है जिसे प्रश्नावली का एक अवगुण कहा जा सकता है। जबकि, साक्षात्कार अनुसूची के मामले में ऐसा नहीं होता ।

अपनी प्रगति की जांच करें

11. 'मानवविज्ञानी डेटा संग्रहण के लिए साक्षात्कार अनुसूची और गाइड का इस्तेमाल करते हैं।' यह कथन सही है या गलत, इसका उल्लेख करें।

.....

.....

.....

12. 'मानवविज्ञानी साक्षात्कार लेते समय प्रश्नावली भरते हैं।' यह कथन सही है या गलत, इसका उल्लेख करें।

.....

.....

.....

14.4 सारांश

इस इकाई में हमने शिक्षार्थियों को उन सभी उपकरणों और तकनीकों के बारे में जानकारी दी जिसे शोधकर्ता फील्ड में तथ्य संग्रहण के लिए इस्तेमाल करते हैं। इस इकाई का मुख्य उद्देश्य शिक्षार्थियों को उनके द्वारा चुने गए शोध विषय के आधार पर फील्ड में सही उपकरण और तकनीकों का चयन करने में सक्षम बनाना है। अब तक शिक्षार्थी इस बात को जान गए होंगे कि मानववैज्ञानिक अनुसंधान के लिए शोधकर्ता फील्डवर्क, सर्वेक्षण, प्रलेखन अथवा प्रयोग जैसी विधियों में से किसी एक विधि अथवा एक से अधिक विधियों का उपयोग कर सकते हैं। यहाँ हमने अवलोकन, साक्षात्कार, जीवन इतिहास, केस स्टडी, वंशावली और फोकस समूह चर्चा के बारे में विस्तारपूर्वक चर्चा की है जिनका इस्तेमाल फील्ड में डेटा संग्रहण के लिए किया जाता है।

14.5 सन्दर्भ

फोनटिन, जोस्ट. (2014). '*डूइंग रिसच : फील्डवर्क प्रेक्टिकलिटिज*. डूइंग एंथ्रोपोलॉजिकल रिसर्च , नेटली कोनोपिंसकी द्वारा संपादित, लंदन एवं न्यूयॉर्क : रूटलेज. पेज 70–90.

गोडे, विलियम जे. एवं पॉल के. हेट. (1981). *मेथड्स इन सोशल रिसर्च.* टोक्योः मैकग्रा–हिल इंटरनेशनल बुक कंपनी.

कोठारी, सी. आर. (2009). *रिसर्च मेथोड़ोलोजी.* नई दिल्ली : न्यू एज इंटरनेशनल पब्लिशर्स.

लेंग्नेस, एल. एल. (1965). *द लाइफ हिस्ट्री इन एंथ्रोपोलॉजिकल साइंस,* न्यूयॉर्क : होल्ट, राइनहार्ट एवं विंस्टन.

मालिनोव्स्की, बी. (1922). *अर्गोनोट्स ऑफ द वेस्टर्न पेसिफिक : एन अकाउंट ऑफ नेटिव एंटरप्राइज एंड एड्वेंचर इन द आर्किपेलागोज ऑफ मेलनेसियन न्यू गीनी* : लंदनः रूटलेज एवं केगेन पॉल.

यंग. वी. पॉलिन. (1996). *साइंटिफिक सोशल सर्विस एंड रिसर्च.* दिल्ली : प्रेंटिस हॉल ऑफ इंडिया.

14.6 आपकी प्रगति जांचने हेतु उत्तर

1. क. फील्डवर्क ख. सर्वेक्षण ग. प्रलेखन एवं घ. प्रयोग
2. खंड 14.1.2 को देखें
3. खंड 14.1. 3 को देखें
4. सही
5. ब्रोनिस्लाव मालिनोवस्की
6. खंड 14.2.1 को देखें.
7. सही
8. गलत
9. हरबर्ट स्पेंसर
10. गलत
11. सही
12. गलत

ignou
THE PEOPLE'S
UNIVERSITY

सुझावित अध्ययन

बर्नाड, एलन. (2007). सोशल एंथ्रोपोलॉजी : *इंवेस्टिगेटिंग ह्युमन सोशल लाइफ*: नई दिल्ली विवा बुक्स प्राइवेट लिमिटेड.

क्लिफर्ड, जेम्स एंड जार्ज. ई. मार्कस. (संपा) (1990). राइटिंग कल्चरः द पोयटिक्स एंड पाल्टिक्स ऑफ इथेनोग्राफी. दिल्लीः आक्सफोर्ड युनिवर्सिटी प्रेस.

इरिक्सन, थामस हायलैड. स्माल प्लेसेज, लार्ज इशुजः *एन इंट्रोडक्शन टू सोशल एंड कल्चरल एंथ्रोपोलॉजी* (चतुर्थ संस्करण). 4जी संपा., प्लूटो प्रेस, 2015.

इंगलेक,एम. (2018). *हाउ टू थिंक लाइक एन एंथ्रोपोलाजिस्ट.* प्रिंसटन, आक्सफोर्डः प्रिंसटन विश्वविद्यायल प्रेस.

इवंस–प्रिचर्ड, ई.ई. (1940). *द न्यूर.* आक्सफोर्ड : द क्लेरडान प्रेस.

इवांस–प्रिचर्ड, एडवर्ड इवान और एंड्रे सिंगर.(1981) *ए हिस्ट्री ऑफ एंथ्रोपोलॉजिकल थॉट.* लंदनः बेसिक बुक्स.

फोर्ट्स, मेयर. (1969). *किनशिप एंड सोशल आर्डर.* शिकागोः एल्डिन पब्लिशर्स.

गेर्ट्ज, क्लिफोर्ड (1973). *द इंटरप्रिटेशन ऑफ कल्चर.* न्यूयार्क : बेसिक बुक्स.

गेन्नेप, अर्नोल्ड वैन (1909). *द राइट्स ऑफ पैसेज* (मोनिका बी विएडोम और गैब्रिएला कैफी द्वारा अनु.) लंदनः टलेज और केगन पॉल.

हॉल, एडवर्ड. टी. (1976). *बियांड कल्चर.* गार्डन सिटी, न्यूयार्क : एंकरप्रेस/डब्लडाय, 1976.

हैविलैंड, डब्ल्यू.ए (2003). *एंथ्रोपोलॉजी.* बेलमोंट, सीएः वड्सवर्थ.

इंगोल्ड, टिम. (1986). *इवोलूशन एंड सोशल लाइफ.* कैम्ब्रिजः कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस.

2018- एंथ्रोपोलॉजीः वाय इट मैटर्स. कैम्ब्रिज, यूकेः पॉलिटी प्रेस.

कपलान, डेविड और रॉबर्ट ए मैनर्स. (1972). *कल्चर थियरी.* इलिनोइसः वेवलैंड प्रेस.

लुईस, आई.एम. (1976). *सोशल एंथ्रोपोलॉजी इन प्रस्पेक्टिवः द रिलेवेंस ऑफ सोशल एंथ्रोपोलॉजी.* हार्ममंडवर्थ : पेंगुइन बुक्स.

मोनाघन, जॉन और पीटर जस्ट. (2000). *सोशल एंड कल्चरल एंथ्रोपोलॉजीः अ वेरी शार्ट इंट्रोडक्शन* - ISBN: 9780192853462

मूर, हेनरीटा और टॉड सैंडर्स. (संपा) (2006). *एंथ्रोपोलॉजी इन थ्योरीः इशूज इन एपिस्टेमोलॉजी.* यूएसएः ब्लैकवेल पब्लिशिंग.

स्टाकिंग, जी. 1974- द शेपिंग ऑफ अमेरिकन एंथ्रोपोलॉजी, 1883–1911- *अ फ्रैंज बोआस रीडर.* न्यूयार्क : बेसिक बुक्स.

ignou
THE PEOPLE'S
UNIVERSITY